प्रथम अध्याय

आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी जीवन

: प्रथम अध्याय :

``आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी जीवन``

विषयप्रवेश :-

भारतीय संस्कृति पुरूष प्रधान संस्कृति है। यहाँ स्त्रियों की अपेक्षा पुरूष को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। संस्कृति नियमों के निर्माता पुरुष ही होने के कारण उन्होंने नारी को अनेक निर्बंधों में जकड़ दिया है। पुरातन काल से लेकर आज तक नारी पुरूषों के अत्याचार को सहती आयी है।

पुरातन काल तथा प्राचीन काल में अनेक धार्मिक कार्यों में नारी की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। राजसूय यज्ञ के समय यज्ञपूजा के प्रसंग में राम को सीता के स्थान पर उसकी मूर्ति बनाकर यज्ञ पूजा करनी पड़ी थी। इससे नारी की अनिवार्यता, महत्ता स्पष्ट होती है। फिर भी प्राचीन एवं पुरातन काल में नारी पर अनेक अत्याचार किए गए हैं। सीता का ही उदाहरण हमारे सामने है, जिसे रावण बलपूर्वक उठाकर ले गया था। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या को इंद्र ने छल से भोगा था, और निर्दोष अहिल्या पति के शाप के कारण पत्थर में परिणत हो गई थी।

प्राचीन काल में नारी को शिक्षा तथा विवाह के बारे में कुछ स्वतंत्रता थी जो नारी बड़ी जाति या उच्च वर्ग से संबंधित थी, परंतु सामान्य नारी का जीवन आज की तरह ही दयनीय था। स्वयंवर में नारी को अपना जीवन साथी चुन लेने का अधिकार था परंतु वहाँ भी पुरूष अपने बाहुबल के प्रयोग से नारी का हरण करता था। महाभारत में भीष्म ने अपने भाई के लिए अंबा, अंबिका, अंबालिका का हरण किया था। संयोगिता जैसी कन्याओं को अपनी इच्छा के विरूद्ध स्वयंवर में भी उसी युवक को चुनना पड़ता है जिसे माता-पिता कहें। परंतु संयोगिता पृथ्वीराज चौहान के पुतले को वरमाला पहना कर पृथ्वीराज को ही वर लेती है। इस प्रकार स्वयंवर एक दिखावा बन जाता था। अनेक सुंदर युवतियों को तथा विवाहित नारी को भी युद्धों द्वारा हासिल किया जाता था। इसका उदाहरण `पद्मावत` में मिलता है।

भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर समझने की प्रथा है। पति द्वारा दी गई पीड़ा को नारी आशीर्वाद समझकर उसे सह लेती है। पति के वियोग में तड़पनेवाली नारी के उदाहरण भी कम नहीं है। `पद्मावत` की नागमती और `यशोधरा` की यशोधरा इस का प्रमाण हैं जिन्हें पति छोड़ कर चले जाते हैं और ये पतिपरायण नारी विरह की अग्नि में जलती, उन्हें याद करती जीवन बिताती हैं। गुप्त जी ने

यशोधरा की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है -

``अबला जीवन हाय !तुम्हारी यही कहानी

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।``[1]

इससे स्पष्ट होता है कि गुप्त जी नारी को बच्चे को दूध पिलानेवाली माँ और पीड़ा से आहत होकर आँखों से नीर बरसानेवाली पीड़ित नारी की अपेक्षा कुछ नहीं समझा। लोकनायक तुलसीदास ने `रामचरितमानस` में नारी संबंधी अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा हैं -

``ढ़ोल, गंवार, पशु, क्षुद्र नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।`` तात्पर्य यह कि ढ़ोल, गंवार, पशु और क्षुद्र की तरह नारी भी प्रताड़ना करने योग्य ही है, ये सब पुरूषों के द्वारा पिटने के लिए ही जन्म लेती हैं। अपने दोहों, छंद, सूक्तियों आदि के द्वारा समाज में स्थित अंधविश्वास, बाह्याडंबर की प्रताड़ना करनेवाले समाज सुधारक कबीर ने भी नारी को हीन ही समझा है और बताया है कि नारी मानव-प्रगति में बाधक बनती है, वह पुरूष के सर्वनाश का कारण बनती है। जैसे -

``नारी की छाया पड़त अंधा होत भुजंग।

कबीरा तिनकी कौन गति जो नित नारी के संग।``

अत: स्पष्ट है कि प्राचीन काल में भी नारी को हीन ही समझा जाता था। परंतु फिर भी नारी की स्थिति प्राचीन काल में मध्यकाल की अपेक्षा अच्छी समझी जा सकती है क्योंकि मध्यकाल में नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई थी। विकास कुमार झा की दृष्टि से इसका महत्त्वपूर्ण कारण है - ``युद्ध में उपयोगिता की दृष्टि से पुरूषों की अहमियत बढ़ गई। पुरूष जन्म को शुभ माना जाने लगा। लड़कियाँ तब दूसरे दर्जे पर आ गयी और तभी से जो औरत की यातनाओं का अंतहीन सफर शुरू हुआ, सो थमा नहीं।``[2] इस बात से स्पष्ट होता है कि युद्ध में पुरूषों की उपयोगिता के कारण नारी को पुरूषों की अपेक्षा निर्बल तथा अबला समझकर उसे गौन स्थान पर रखा गया।

मध्ययुग में मुगलों का साम्राज्य था, अत: उनके द्वारा युद्ध में पराजित राजाओं की रानियों के साथ उस राज्य की सुंदर स्त्रियों को बलपूर्वक अपने जनानखाने में रखा जाता था। बहुपत्नीत्व की प्रथा को इसी काल में सम्मान मिल गया था। अनेक मुघल शासक अपनी काम-तृप्ति के लिए सुंदर-सुदंर युवतियों को अपने हरमखाने की शोभा बढ़ाने के लिए बलपूर्वक उठा लाते थे। उन पर अनेक प्रकार

से अत्याचार किया जाता था। इस अत्याचार से बचने के लिए अनेक्क युवतियाँ आत्महत्या करती थी। युद्ध में पति के मरने पर अपनी इज्जत बचाने के लिए अनेक राजपूत नारीयाँ जोहर करती थी। तात्पर्य यह कि मध्यकाल में नारी की यातनाओं ने एक परिसीमा को पार किया था।

मध्य काल में किसी भी सुंदर स्त्री का स्वतंत्र रूप में विचरण करना खतरे से खाली नहीं था, अत: इसी काल में नारी की शिक्षा-दीक्षा पर रोक लगा दी गई और परदा प्रथा की रूढ़ी सामने आयी। इस काल में पर्दा नारी की इज्जत बचाने का कवच ही था। पति की मृत्यु के बाद विधवा नारी को पुनर्विवाह की अनुमति समाज नहीं देता था बल्कि उसे पति की चिता के साथ ही सती जाना पड़ता था। तात्पर्य यह कि मध्यकालीन नारी अत्यंत दीन-हीन, अबला, पुरूषों के अधिकार में दयनीय जीवन जीने वाली नारी थी, उसे पुरूषों के द्वारा हर प्रकार से पीड़ित किया जाता था।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक नारी को अबला, निर्बल, नि:सहाय तथा हीन समझा जाता था। परंतु नारी तब भी सबल, साहसी तथा पराक्रमी थी और आज भी है। पुरातन काल में कैकयी ने दशरथ राजा के कंधे से कंधा लगाकर युद्ध किया था। मध्यकाल में तो अनेक ऐसी वीरांगनाएँ हो गई, जिन्होंने अपने वतन के खातिर अपने प्राणों की पर्वा किए बिना युद्ध-क्षेत्र में दुश्मन के दाँत खट्टे किये थे। इन नारियों में चांदबीबी, ताराबाई, `मेरी झाँसी नहीं दूँगी` कहनेवाली रानी लक्ष्मीबाई आदि वीरांगनाओं के नाम गिनाएँ जा सकते हैं। फिर भी समाज नारी जाति को अबला ही समझता है।

आधुनिक काल में कुछ ख्रीस्ती मिशनरी और महाराष्ट्र में महात्मा जोतीराव फुले के प्रयत्नों के कारण नारी को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ। इस युग में भी नारी को यातना देनेवाली `सती प्रथा` जैसी दाहक कुप्रथाएँ प्रचलित थी, भारतीय संस्कृति में ` सती प्रथा` के उदाहरण प्राचीन काल से ही मिलते हैं - ``इतिहासकारों के अनुसार सन् 600 के आसपास भी सती होने के प्रमाण मिलते हैं। बल्लभीपुर में शिलादित्य का शासन था। पारसियों के आक्रमण का मुकाबला शिलादित्य ने बड़ी वीरता से किया, लेकिन उसकी मृत्यु हो गयी। राजा के साथ उस की सभी रानियाँ सती हो गयी।``[3] उस प्रथा में पति की चिता में जलकर पत्नी अपना जीवन समाप्त करती थी। जो औरत सती जाना नहीं चाहती उसे बलात् चिता में जलाया जाता था। आज भी पति की मृत्यु का कारण मानकर पूरे परिवार और समाज में विधवा नारी को पीड़ित किया जाता है। विगत काल में विधवा का केशवपन किया जाता था, उसे बांसी अन्न दिया जाता था और घर के किसी कोने में उसे जगह दी जाती थी। पति की संपत्ति से उस बेदखल किया जाता

था। ऐसी पीड़ा से बचने के लिए विधवा नारी सती जाने का निर्णय लेती थी। ``सती-प्रथा समर्थकों ने यह भी कहा कि औरत के लिए अच्छा यही है कि वह पति की मृत्यु के बाद जल मरे नहीं तो वह जरूर चरित्रहीन हो जाती है।``[4]

राजाराम मोहन राय के प्रयत्नों से सती प्रथा को खत्म करने का कानून बनाया गया परंतु आज भी नारी सती जाती हैं। `सारिका'पाक्षिक के'नारी यातना-कथा विशेषांक-एक` के रेखालेख में बताया है - ``राज्यस्थान में कोठड़ी में 1-4-73 को सावित्री नाम की 29 वर्षीया युवती सती हो गई। 3-10-73 को गोल्यार्णे की 52 वर्षीया सती हो गई। इसी तरह गोविंदपुरी की हेमकंवर 9-9-73 को तथा 25-2-74 को सूरपूरा की सरताज कंवर भी सती हो गई। 30 अगस्त को झा डोली ग्राम में ओमकंवर सती हो गई।``[5]

आज नारी उच्च शिक्षा से विभूषित होने लगी है। वह पुरूषों के साथ हर क्षेत्र में अपनी बुद्धि तथा चातुर्य के कारण कार्यरत है। फिर भी समाज में पुरूषी वर्चस्व के कारण आज भी नारी पर भांति-भांति से अत्याचार किए जाते हैं। उसे कही बलात्कार तो कही दहेज के कारण जलाया जाता है। ऐसी घटनाएँ रोजाना ही समाचारपत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। तात्पर्य यह कि प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी पुरूषों की पीड़ा को सहती आई है। पुरूष प्रधान संस्कृति ने समाज के नियम बनाते समय नारी को सिर्फ भोगवस्तु समझकर उसे हर अधिकार से वंचित किया है।

विश्व के सभी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी के यातनामयी जीवन को प्रस्तुत कर उसे न्याय दिलाने की कोशिश की है। इसी उद्देश्य को लेकर `सारिका` पत्रिकाओं में नारी यातनाओं को विषय बनाकर अनेक कहानियाँ छपी हैं। उन्हीं कहानियों में चित्रित नारी जीवन का अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया है।

`सारिका` पत्रिका के निर्दिष्ट अंकों में नारी-जीवन पर अनूदित कहानियों को छोड़कर कुल तैंतीस कहानियाँ हैं। उनमें से वेश्या नारियों के जीवन को चित्रित करनेवाली कहानियों पर चौथे अध्याय में प्रकाश डाला है, अत: उन कहानियों का इस अध्याय में समावेश नहीं किया है। नारी जीवन पर लिखी तेईस कहानियों में से - `दुनियाँ का सबसे अनमोल रतन`, `फूलों का कुरता`, और `धुंवा` कहानियों में नारी-यातना का चित्रण नहीं मिलता, अत: बाकी बीस कहानियों में नारी के यातनामई जीवन का चित्रण किया है, जिनके आधार पर नारी के यातनामई जीवन के विविध पहलुओं का विवेचन प्रस्तुत

अध्याय में किया है।

अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नलिखित विविध पहलुओं को सामने रखकर नारी के यातनामई जीवन का चित्रण किया है -

(1) गृहिणी नारी का जीवन।

(2) पति द्वारा पीड़ित नारी का जीवन।

(3) परित्यक्ता नारी का जीवन।

(4) एक से अधिक मर्दों में बटी नारी का जीवन।

(5) नौकरी पेशा नारी का जीवन।

(6) माता-पिता द्वारा पीडित लडकी का जीवन।

(7) बाल विवाहित नारी का जीवन।

(8) कामासक्त नारी का जीवन।

(9) बीमार नारी का जीवन।

(10) प्रौढ़ कुमारी तथा कुरूप नारी का जीवन।

(11) सास, ननंद के नियंत्रण में रहनेवाली नारी का जीवन।

(12) बलात्कारित नारी का जीवन।

(13) कुँआरी माता का जीवन।

(14) अकेली नारी का जीवन।

(15) विधवा नारी का जीवन।

क. गृहिणी नारी का जीवन :-

परिवार में घर का काम-काज देखनेवाली पत्नी या माता गृहिणी नारी के रूप में प्रस्तुत होती है। इन नारियों को घर का पूरा काम अपने जिम्मे लेना पडता है। परिवार के सभी सदस्यों की सेवा-

सुश्रृषा गृहिणी को ही करनी पड़ती है। खाना पकाना, बर्तन मांजना, खाना परोसना, कपडे धोना, सब्जी लाना ऐसे कार्यों से इस नारी को फुरसत ही नहीं मिलती है।दिन-रात मेहनत करके वह अपना घर संभालती है। पति और बच्चों के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों का भी उसे ध्यान रखना पडता है। एक तरह से सुबह से लेकर शाम तक,साल पर साल मशिन की तरह गृहकार्य में लगे रहना ही गृहिणी नारी का धर्म कर्म और उसका जीवन होता है।

कुछ नारीयों के पति नौकरी करते हैं, अत: घर की किसी भी परेशानी की ओर ध्यान नहीं देते, बस महीने के महीने वेतन में से कुछ रूपये देते हैं परंतु यह नहीं सोचते कि इतने-से रूपयों में पत्नी किस प्रकार घर चलाएगी? चला पाएगी भी या नहीं ? मधु किश्वर की कहानी `बीस या पच्चीस` में चित्रित मिन्ना के पति उसे मासिकाना 1500 रू. घर-खर्चे के लिए देते हैं। उन्हीं पैसों से मिन्ना को घर का किराया, बच्चों की पढ़ाई की फीस, राशन, सब्जी, बच्चों के युनिफॉर्म आदि का भूगतान करना पड़ता है। वह चाहकर भी अपने लिए कुछ खरीद नहीं सकती। घर के अन्य सदस्यों के बारे में सोचते-सोचते ही उसका जीवन बितता है। इसके बावजूद पति की इच्छा-अनिच्छा का ध्यान उसे रखना पड़ता है। घर में विशेष सब्जी या खाने की चीज बार-बार बनाई जाती है तो पति देव गुस्सा होकर कहते हैं -

``ओफो ! क्या ही सदियों पुराना पुलाव ! तुम नूडल-वूडल बनाना क्यों नहीं सीखती ?``[6] आर्थिक समस्या का विचार करके कभी खीर बनाती है तो पति कहते हैं - ``अगर यह खीर ही खाते रहना था तो पढ़ी-लिखी मॉडर्न बीवी क्यों ढूँढी? तुम क्या फैमिना, इण्ज वीकली भी नहीं पढ़ सकती हो ? ------मिसेज मेहरा को देखो -आज `चाईनीस` खाना तो कल `फ्रेंच` पुडिंग। तुम्हारे और मेरी माँ के खाने में कुछ तो फर्क होना चाहिए-इतनी पढ़ी-लिखी हो !``[7] आर्थिक आभाव के कारण पति की रूचि के अनुसार खाना नहीं बनाया तो पति द्‌वारा उलाहनों को सुनना पड़ता है और खाना अच्छा तथा महंगा बनाया जाए तो घर के खर्चे के लिए पैसे पूरे नहीं पडते, ऐसी ही उधेडबुन में गृहिणी नारी का जीवन बिताता चला जाता है। उसकी इच्छा-अनिच्छा का कोई विचार नहीं करता।

परिवार चलानेवाली नारी अपने खर्चे में से पैसे बचाने की आदि होती है। घर का रद्‌दी माल बेचकर जो पैसे मिलते हैं उसे पतिसे बचाकर रखती है ताकि किसी वक्त काम आए। परंतु इस तरह जमा किए पैसों पर भी पति की नजर रहती है। मिन्ना के पति भी अपने दोस्त के लिए खाने-पीने का इंतजाम करने के लिए मिन्ना की पूंजी खर्च कर डालता है। जैसे -``तीन महीने से पुरानी रद्‌दी और शीशी-बोतल

बेच-बेचकर जो उसने पैसे बचाये थे सोनू की गर्म यूनिफार्म के लिए वह सब गायब थे।``[8] इस बात से परेशान मिन्ना अपनी नौकरानी भगवती जिसकी परेशानी दूर करने के लिए मिन्ना ने उसे कपडे धोने का काम अलग-से दिया था। वह उसे कहती है - ``सुन, कल से तू कपडे मत धोना ! मैं खुद धो लिया करूंगी।``[9] इस बात से स्पष्ट है कि पति को घर की परेशानियों से कोई सरोकार नहीं होता। बस महीने में कुछ रूपये पत्नी के हाथ में देने के बाद अपनी जिम्मेदारी को खत्म समझते हैं।

इसी कहानी में चित्रित भगवती अपने घर का खर्चा चलाने हेतु आस-पड़ोस के बड़े-बड़े घरों में बर्तन मांजने का काम करती है। उसका पति शराबी तथा निक्कमा होने के कारण उसके पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी पर है। अत: जिन घरों में वह काम करती है उनमें से एक घर छूटने के कारण वह परेशान-सी रोती है ताकि उसे इस बात की चिंता है कि बच्चों की एक समय की सब्जी भी बंद हो जाएगी। जब मिन्ना उसे दूसरा घर ढूंढने की बात कहती है तो भगवती बोलती है -``कहां इतनी जल्दी मिल जाता है? 15-20 दिन तो लग ही जायेंगे --महीना भी लग सकता है। कैसे खर्चा पूरा करूंगी ?``[10] अत: स्पष्ट है कि गृहिणी भगवती अपना जीवन परिवार के बारे में ही सोचते-सोचते बिताती है। इसी तरह श्याम निर्मम द्वारा लिखी कहानी `सांप सीढ़ा` कहानी की परबतियां का जीवन भी घर गृहस्थी के बारे में सोचते-सोचते तथा दिन रात मेहनत करते -करते मशीन की तरह काम करके अपने परिवार को ऊपर उठाने की कोशिश करती है। परंतु उसका शराबी पति उसका साथ नहीं देता और ना ही बेटें माँ की कोई मदद करते हैं। वह अकेली ही अपने घर का काम-काज देखती है। पति और बेटों के कारण परेशान-सी परबतिया कहती है - ``कमबख्त बाप-बेटों ने मिलके जनम दु:खी कर रखा हैगा। बाप सराफ में पैसे उड़वै, अर यो हराम जादे सुबै सै सांझ लौ कबुतरबाजी करै जावै हैंगे। मेरी तो नाक में दम आ गया।``[11]

परबतिया को घर का खर्चा चलाने की चिंता है परंतु उसका पति घर में कुछ लाने के बजाय शराब में धन खर्चा करता है। वह घर-गृहस्थी के बारे में कुछ भी नहीं सोचता। परेशान-सी परबतिया कहती है - ``बीसेक रूपे आये होयंगे, ग्यारै की सराफ, और एक-डेढ़ रूपे का लमकीन, हमैं तो तबा कर दिया नास पीटे नै। यो कई का नी छोड़ैगा, ऐसी हरामजादी सराफ पीछै पड़ी हैगी कमबख्त रोजीना ढकार कै आ जावै हैगा। घरवाले जावै भाड-चूल्हे में, इसै क्या पड़ी।``[12] अत: स्पष्ट है कि परबतिया का पति घर की हालत तथा परिस्थिति के बारे में सोचने की बजाय शराब के नशे में चूर अपने पर ही पैसा खर्च करता है।

परबतिया का पति,परबतिया को शराब पीने के बाद गालियाँ भी देता है परंतु फिर भी वह पति के साथ अच्छा व्यवहार करती है, उसकी सेवा करती है। उसे कोई चोट लगती है तो परबतिया को दर्द होता है, वह तुरंत उसकी सेवा के लिए तत्पर रहती है। जैसे -``हाय राम ! थोर तो खून निकल रिया हैगा ! के हो गिया ? बाल्टी सै चोट लग गी के। जिब बस की नी तो दूद क्यूं काढ़वै लगरे थे। कैरो, मैं अबी पनकपडा बांध दूंगी।``[13]

शराबी पति और मक्कारा बेटों के कारण बाहर का आदमी निरजू परबतिया के घर-गृहस्थी में तनाव पैदा करके अपनी गृहस्थी चलाना चाहता है। अपने इस कार्य को संपन्न करने हेतु वह परबतिया के पति को शराब की लत लगा देता है और बाप बेटों में फूट डालकर अलग करता है। परबतिया का पति इस बात को समझता ही नहीं उल्टा उसीके साथ शराब पीने चला जाता है।परबतिया चाहते हुए भी कुछ कर नहीं सकती, बस बिरजू के कारण अपने परिवारकी बरबादी होते देखती है और छटपटाती है। परिवार के बारे में सोचते-सोचते वह मानसिक रूप से इतनी दुर्बल होती है कि सपने में भी उसे अपनी तथा परिवार की बरबादी दिखाई देती है। जैसे - ``सीढी पर चढ़े-चढ़े ही उपले निकालने के लिए हाथ बढ़ाया कि देखा, एक काला नाग फन उठाए बढ़ा आ रहा है। वह अचकचा कर पीछे हटी। इतने में सीढ़ी डगमगाई और वह धडाम से औंधे मुह नीचे गिरी। पेट से मांस के लोथडे के साथ खून की नदी बहने लगी।``[14] इस प्रकार का सपना देखने पर वह सोचती है कि यह सपना नहीं सच ही है। काले नाग के रूप में बिरजू उसे डसने आता है वह सोचती है कि वे दोनों (पति-पत्नी) मर जाने के बाद बच्चे लावारिस की तरह भुखे-प्यासे मर जाएँगे।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में गृहिणी का जीवन अपने लिए नहीं अपितु परिवार की हालत पर सोचते-सोचते ही बीत जाता है। वह परिवार की भलाई के लिए अपना पूरा जीवन दांव पर लगा देती है।

ख. पति द्वारा पीड़ित नारी का जीवन :-

भारतीय संस्कृति में पुरूष को प्रधान स्थान दिया जाता है और नारी को गौण। पति को परमेश्वर समझकर उसे पूजनेवाली भारतीय नारी पति के द्वारा दी हुई हर शारीरिक तथा मानसिक पीड़ा को सहते-सहते अपना जीवन व्यतित करती है। वैदिक काल में पत्नी को समाज में पति के बराबर का स्थान प्राप्त था, परंतु आगे चलकर पत्नी को पति की काम-तृष्णा मिटानेवाली भोग वस्तु के रूप में देखा जाने

लगा। उसे संतति उत्पन्न करने की मशीन समझा जाने लगा। प्राचीन काल से लेकर आज तक पुरूषों के अत्याचारों को सहते-सहते नारी खुद मानने लगी है कि उसका जीवन इन अत्याचारों को सहते-सहते समाप्त होना ही है। वह परिवार के लिए अपने स्वास्थ्य का विचार किए बीना जी तोड़ मेहनत करती रहती है। परंतु फिर भी किसी-न-किसी बात को लेकर पतिद्वारा उसे प्रताड़ित किया जाता है। धर्मपाल के अनुसार - ``नारी ने न कभी अपने स्वास्थ्य की चिंता की, न अपने अस्तित्व की और न ही अपनी अस्मिता की परंतु अथक श्रम करके वह घर-गृहस्थी की व्यवस्था संभालती रही।``[15] इतना सबकुछ करने के बावजूद भी नारी को समाज में गौण स्थान पर रखा गया है। पति द्वारा हर प्रकार से उसे पीड़ित और प्रताड़ित किया जाता है। इसी कारण परिवार और समाज भी उसे हीनता की दृष्टि से देखता है। शकुंतला चव्हाण के अनुसार - ``पुरूष प्रधान समाज-विधान में नारी का स्थान दूसरे दर्जे का है। इसीलिए उसका अस्तित्व नगण्य-सा बन गया है। लेकिन यदि कोई नारी पति द्वारा पीड़ित और उपेक्षित है, तो उसे परिवार और समाज में अत्यंत तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है।``[16] अत: स्पष्ट है कि पति द्वारा पीड़ित और प्रताड़ित नारी को हर जगह घृणा और लांछन तथा प्रताड़ना का ही सामना करना पड़ता है।

पति अपना पुरूषार्थ दिखाने तथा पत्नी पर रोब जमाने के लिए अक्सर किसी-न-किसी बात को लेकर पत्नी को पीटता है, तथा अपमानित करता रहता है। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` में अपनी गुमराह हुई बेटी से बात करने के कारण पति अपनी पत्नी को घसिटते हुए ले जाता है और गालियाँ देने के साथ पीटता भी है। और असहाय माँ बेटी के सामने पीटती रहती है। जैसे-`पीटती हुई मां गाय की तरह डंकारती हुई चली जा रही थी। मां और वह, वह और मां। दोनों ने इस घर में पीटने के सिवाय क्या पाया है।``[17]

हमारे समाज में पत्नी को सिर्फ भोग्या के रूप में देखा जाता है। दिन भर परिवार की भूख मिटाने के लिए कार्यरत नारी को थकान से चूर होते हुए भी अपने पति की इच्छा की खातिर अपना शरीर उसे भोगने के लिए देना पड़ता है और न भी दे तो पति उसकी इच्छा के विरूद्ध बलपूर्वक उसे भोगता ही है। मधु किश्वर द्वारा लिखित कहानी `बीस या बच्चीस` की भगवती दिन-रात दूसरों के घरों में मजदूरी करके अपना परिवार चलाती है। पति घर में फुटी कौड़ी भी नहीं देता, ऊपर से शराब पीकर मारता-पीटता रहता है और उसकी इच्छा के विरूद्ध परिवार के सदस्यों के सामने ही उसे भोगता है। मित्रा जब भगवती से खुश रहने को कहती है तो वह सोचती है - ``जिस औरत का आदमी न तो उसे घर का खर्चा देता हो, न

ही शादी के दस साल में उससे ढंग से बात की हो-पर हर साल-दो साल बाद उस पर एक और बच्चे का भार जरूर लाद देता हो उस पर आये दिन मार-पिटाई-कभी जूते से, कभी डंडे से, कभी बेलन से और कभी घूंसे और लातें।``[18] तात्पर्य पत्नी अगर मेहनत मजदूरी करें तो पति को चाहिए कि उसकी प्रशंसा करें, उसकी सराहना करें परंतु भगवती का पति उसकी सराहना करने की बजाय उसे पीड़ा ही देता रहता है। और भगवती का जीवन इन यातनाओं में ही बितता जा रहा है।

इसी प्रकार श्याम निर्मम द्वारा लिखी कहानी `सांप सीढ़ी` में चित्रित परबतिया का पति घर का काम देखने के बजाय शराब पीकर परबतिया को गालियाँ देता रहता है। उसे परेशान करता रहता है। पत्नी को जरा-सी देर होने पर उसे फटकारना तथा गालियाँ देने लगता है और अपने मर्द होने की दुहाई देने लगता है। जैसे - ``ओ उल्लू की पट्टी !अबे कायकू बुक्का फाड़ रई हैगी ! कुछ सरम-लिहयाज भी बची कै नी। मरदों के सामनै चीख री, आसमान सिर पै उठा रक्खा हैगा बदजात औरत।``[19] इस प्रकार परबतिया का पति घर के लिए अपना कर्तव्य तो भूल ही चुका है परंतु अपनी पत्नी जो दिन-रात मेहनत करती है, त्रस्त, परेशान होकर क्रोधवश कुछ कह देती है तो उसकी आवाज दबाने की कोशिश करता है। इसके बावजूद पतिव्रता नारी परबतिया अपने पति की सेवा ही करती है, क्योंकि वह भारतीय नारी है और भारतीय नारी को बचपन से ही शिक्षा मिलती है। जैसे - ``पतिव्रता-नारी पति द्वारा तिरस्कृत होने पर भी पति से घृणा नहीं करती, उस पर अविश्वास नहीं करती -- बचपन से ही नारी को पुरूष का आदर करना सिखाया जाता है और पति को परमेश्वर मानने का उपदेश दिया जाता है।``[20] बिल्कुल यही विचार परबतिया के हैं, जो प्रस्तुत कहानी से दृष्टिगोचर होते हैं। सत्यपाल सक्सेना द्वारा लिखी कहानी `अंधेरे के विरूद्ध` में चित्रित वसुधा का पति अपनी माता और बहन की बातों में आकर वसुधा को तंग करता है और पीटता भी है। अपने पर हुए अत्याचार के कारण वसुधा दर्द से छटपटाती रहती है परंतु इस अत्याचार के बारे में वह किसी के सामने अपना मुँह नहीं खोलती ताकि अगर किसी को बताती भी है तो लोग उसे अत्याचार को चुपचाप सहने की नसीहत देते हुए कहते हैं तुम तो वसुधा हो, हर अत्याचार को सहनेवाली और सहकर भी कठिनाइयों का सामना करनेवाली। तब वसुधा सोचती है -``मैं सिर्फ वसुधा नहीं हूँ, एक औरत भी हूँ, किसी सामान्य औरत की तरह एक औरत। वसुधा नाम हो जाने से सभी लोग मुझसे यह आशा क्यों करते हैं कि मैं धरती की तरह सबकुछ सहन करती रहूंगी ----चुपचाप ----- अनंत काल तक।``[21] इस बात से स्पष्ट है कि किसी नारी का नाम वसुधा होने से वह धरती की तरह सभी अपराध,

अत्याचार नहीं सह सकती वह एक हाड-मांस की बनी असहाय नारी है जिसे मन है, भावना है, इच्छा है, साथ में दर्द का एहसास भी उसे होता है। परंतु पति के घर उसे वही सब त्यागकर अपने मन के विरूद्ध कार्य करना पड़ता है।

वसुधा शिक्षा शास्त्र विभाग की स्नातक है (बी.एड.)। वह चाहती है कि कहीं नौकरी करे ताकि इन यातनाओं से छुटकारा मिले। अपने विचार को प्रत्यक्ष रूप में लाने के लिए वह अर्जी भी भेजती है परंतु उसके पति तथा सास को उसका नौकरी करना बिल्कुल पसंद नहीं है। नौकरी करने के लिए बाहर जाना उन्हें पसंद नहीं है। वे तो आस-पड़ोस की औरतों के पास वसुधा का जाना भी पसंद नहीं करते। जब वसुधा स्वेटर की बुनाई सीखने के लिए पड़ोस की दीदी के पास जाती है, तो श्याम को पति आते ही सास उससे चुगली करती है। तब पति क्रोध में उसके चरित्र पर संदेह करके कहता है - ``स्वेटर बिना जान निकल रही थी क्या? क्यों गई थी उसके घर? ये सब जानते हुए भी कि वहां हर दम शराबी-कबाबी, आवारा लोग बैठते रहते हैं --- मुझे तो पहले ही पता था कि तू एक जगह टिकनेवाली औरत नहीं है --``[22] इस प्रकार वसुधा के चरित्र पर शक करके, उस पर घिनौने इलजाम लगाकर उसे पीड़ित तथा प्रताड़ित किया जाता है।

कई पुरूष घर में सुंदर पत्नी के होते हुए भी किसी बाहरी औरत से शारीरिक संबंध रखते हैं। उन्हें घर की औरत में कोई रूचि नहीं होती। ऐसे कामलोलुप पतियों और बाहरी औरत के कारण पत्नी को अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। भारतीय नारी की स्वभाव विशेषता हैं कि वह सब कुछ सह सकती है परंतु सौतन नहीं सह सकती। धर्मपाल के विचार से - ``भावना प्रधान नारी किसी अन्य पुरूष को तो सहन कर लेती है परंतु वह किसी अन्य नारी को सह नहीं सकती।``[23] रखैलों के बहकावे में आकर पति द्वारा अपनी पत्नी पर बहुत ही अत्याचार किए जाते हैं। बूटासिंह द्वारा लिखी कहानी `तीन सतियाँ` में संतो का पति नौकर की बेटी मंदा को अपने ही घर में लाकर अपने ही बीवी के बिस्तर पर उसके साथ रति-सुख लुटता रहता है। वह संतो तथा अपनी माता के सामने ही उसे घर के अंदर ले जाता था। जो पलंग संतो के मायके वालों ने संतो और उसके पति के लिए शादी के उपहार में दिया था, उसी पलंग पर संतो का पति किसी और के साथ संतो के ही सामने यौन-सुख का आनंद ले इससे अधिक नारी की और क्या विडंबना हो सकती है? इतनी पीड़ा देने के उपरांत भी पति का जी नहीं भरता था जो वह संतो को और पीड़ित करने के लिए यौन-सुख लुटने के बाद थकान से चूर होकर संतो से कहता है - ``संतो हमारे वास्ते दूध गरम कर ला।``[24] इतनी जलालत देने पर भी संतो के पति चंदर का मन नहीं भरता, वह हर

समय किसी-न-किसी प्रकार संतो को पीड़ित करता ही रहता है। संतो के मायकेवाले धरम-करमवाले थे, अत: मांस-मच्छी नहीं खाते थे। संतो भी अपने मायके वालों के विचारों से प्रभावित थी अत: वह भी मांस-मच्छी नहीं खाती थी। हर वक्त माला फेरकर अपने दु:खों का अंक करने की मन-ही-मन भगवान से प्रार्थना करती रहती थी। संतो के पति को संतो का माला फेरना अच्छा नहीं लगता था और साथ में वह चाहता था कि उसकी पत्नी भी उसकी तरह मांस-मच्छी खाए। संतो इस बात के लिए राजी नहीं होती, तो उसका पति उसे भ्रष्ट करने के लिए उसके हाथों की माला छीन कर, जबरदस्ती उसके मुंह में मांस के टुकड़े डाल देता है। अपनी इसी पीड़ा को याद करके संतो अपनी संतान से कहती है - ``तेरा बाप चंडाल मेरे हाथों से माला छीनकर मेरी छाती चढ़ बैठता और मेरे मुंह में भुने हुए मांस के टुकड़े ठूंस देता।``[25]

कोई औरत अधिक सुंदर हो तो उसका पति उसके चरित्र पर संदेह करके उसकी प्रताड़ना करता है। पति अगर नौकरी के लिए कहीं और रहता हो और पत्नी घर में अकेली रहती हो तो पति हमेशा पत्नी को शक की नजर से देखता है। कमलेश भारती द्वारा लिखी कहानी -`एक सूरजमुखी की अधूरी परिक्रमा` कहानी में विक्की के पिता अपनी पत्नी को इसी बात को लेकर सताते रहते हैं। यहां तक कि वे विक्की को अपनी औलाद न मानकर हराम की औलाद समझकर उसे अपमानित करते हैं। अपने ऊपर लगाए जानेवाले इस चारित्रिक कलंक के कारण विक्की की माँ आहत होकर हमेशा छटपटाती रहती है। पति की शक्की बीमारी के कारण उसका बेटा आत्महत्या कर लेता है। परंतु फिर भी विक्की के पिता में कोई तब्दिली नहीं आती। लोगों द्वारा पति की शक का कारण पुछने पर विक्की की मां कहती है - ``मेरी न ढलनेवाली खूबसूरती, मेरी गोरी-चिट्टा देह !``[26] इस बात से स्पष्ट है कि नारी को उसकी सुंदरता के कारण भी पति द्वारा शक करके उसे प्रताड़ित किया जाता है, तथा अपनी संतान को अपनी न मानकर उसे किसी और की मानते हैं। अपनी मां के चरित्र को लेकर उस पर अन्याय किया जाता है, इस बात को विक्की बचपन से जवानी तक देखता और महसूस करता आया है। कुछ बातों को वह नहीं जानता था, उसकी मां उसे बताती है। इसका परिणाम यह होता है कि विक्की अपने पिता से नफरत करने लगता है। बाप के द्वारा बार-बार हरामी की औलाद कहना उसे अच्छा नहीं लगता और पिता के प्रति उसके दिल में जो नफरत, घृणा भर गई थी वह अधिक बढ़ जाती है। लोगों द्वारा पिता-पुत्र के बीच बेबनाव का कारण पुछने पर विक्की की मां कहती है - ``जिसकी मां ने सुहागरात को देखा हो कि उसका आदमी किसी रखैल के यहां जाने के बाद उसके पास आया है --- जिसने सुहागरात को ही आईना तोड़ दिया हो ---- अपनी

खूबसूरती पर रोयी हो उसका बेटा बाप से प्यार कैसे कर सकता है।``[27] इस बात से स्पष्ट है कि सुहागरात के दिन से ही विक्की की मां को पति के अत्याचारों को सहना पड़ रहा है। अपने पर किये जानेवाले इन अत्याचारों की गाथा विक्की की मां विक्की को बताती है, अत: विक्की और उसके पिता में नफरत के बीज बोने का कार्य विक्की की मां ही करती है। इस का परिणाम यह होता है कि बिक्की अपने बाप के अत्याचारों से तंग आकर आत्महत्या करता है। विक्की की मां का इकलौता सहारा भी नष्ट हो जाता है।

विक्की के आत्महत्या करने के उपरांत विक्की की मां लोगों के सामने अपने पति को ही बेटे की मृत्यु का कारण बताती है। इस बात से घबराकर विक्की के पिता अपनी पत्नी को जलाकर मार डालते हैं। और लोगों में यह बात फैलाते हैं कि विक्की की मां ने बेटे की मृत्यु के गम में आत्महत्या की है। लेकिन वहां की स्थिति यही बताती है कि विक्की की मां ने आत्महत्या नहीं उसे खुद विक्की के पिता ने जलाया है। जैसे -``वह औरत जिस आदमी को अपने बेटे की आत्महत्या का दोषी ठहराने से जरा नहीं कतराती थी, वही अपनी आत्महत्या को जुर्म से उसे कैसे मुक्त कर सकती थी। जिस बैठक में छत पर लगी बिजली की ट्यूब तक बुरी तरह चिपकी हुई पायी गयी, उसी में वह कागज की चिट कैसे बची रह गई।``[28] प्रस्तुत उद्धरण से कोई भी साधारण बुद्धि रखनेवाला तथा इन परिस्थितियों तथा हालातों पर विचार करनेवाला आदमी जान सकता है कि अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए विक्की के पिता ने खुद अपने हाथों अपनी पत्नी को जलाकर मार डाला है।

वर्तमान युग में शिक्षा से संपन्न होने के कारण नारी अपनी खुद की स्थिति को संवारने का प्रयास करने लगी है। वह नौकरी करके आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण होने का प्रयास करने लगी है। नारी पति के बराबर वेतन पाने लगी है, फिर भी अपने पुरुषी अहम् को कायम रखने के लिए पुरुष नारी को अपने बराबर का स्थान नहीं देता। उसे अभी तक पुरुष एक दासी तथा भोग्या के रूप में ही देख रहा है, और अत्याचार कर रहा है। नारी भी अपना नसीब समझकर उन अत्याचारों को सहती रहती है, जो उसे पति तथा अन्य परिवार के सदस्यों द्वारा दिए जाते हैं। कर्तार सिंह दुग्गल द्वारा लिखी कहानी `करवाँ चौथ` की गीतांजली नौकरी करती है। अपने कार्यालय के साथ-साथ उसे सुबह-शाम घर का सारा काम करना पड़ता है। वह चाहती है कि पति उसकी मदद करें, दो बेटों में से एक बेटे को तैयार करें। पुरूषी अहम् के कारण गीतांजली के पति उसकी मदद करने की बजाय कार्यालय की फाइलें खोलकर उस की चर्चा फोन पर करते रहते हैं। इस बात से परेशान गीतांजली हमेशा बड़बड़ाती रहती है। अत: पति-पत्नी में मनमुटाव उत्पन्न

होता है, तथा दोनों में झगडे भी होते हैं। एक दिन झगड़ा बढ़ते-बढ़ते यहां तक पहुंचता है कि गीतांजली अपने पति द्वारा पीटी जाती है। फिर भी वह सारी घर की जिम्मेदारी पूरी करके कार्यालय में जाती ही है। वह अपने पति की करतूत अपनी सहेली को दिखाती है। उसके शरीर पर पड़े निशानों को देख गीतांजली की सहेली कहती है -``कैसे बैरियों की तरह उसने गीतांजली को पीटा था। ठोकरे और मुक्के --- गालियाँ बकता गया और पीटता गया। जैसे किसी के सिर पर भूत सवार हो। उसकी पीठ पर, बांह पर नील पड़े हुए थे।``[29]

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि प्राचीन काल से लेकर आजतक नारी को भारतीय संस्कृति में गौण स्थान पर ही रखा गया है। पति के अत्याचारों को भगवान की मरजी तथा नशीब का खेल समझ कर वह चूप चाप सहती रही है। आज नारी शिक्षित होकर नौकरी करने लगी है। आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण बनने लगी है। पति के बराबर वेतन भी पाती है परंतु पुरुष अपने अहंकार और दंभ में चूर उस पर अपना अधिकार समझकर जब भी जी में आए उस पर अत्याचार करता है, उसे पीड़ित करता है। अपने को कुभद्र समझने वाले समाज में रहने वाले समाज द्रोही लोग अपनी पुत्र वधू को घर से बाहर भी जाने नहीं देते। ऐसी औरते पति द्वारा पीड़ित होने पर भी किसी बाहरी आदमी के सामने अपनी पीड़ा को व्यक्त नहीं करती। चुपचाप दर्द के घुंट पीते हुए जिंदगी बिताती है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम स्पष्टत: कह सकते हैं कि चाहे जमाना कितना ही क्यों न बदले, औरत कितने ही ऊंचे पद पर आसिन क्यों न हो पुरुष अपनी अहंकारी प्रवृत्ति के कारण उसे हमेशा पीड़ित तथा प्रताड़ित करता रहता है। अपने शारीरिक बल के आधार पर वह नारी पर शासन करता है। कोई स्त्री पुरुष के शारीरिक बल से प्रभावित नहीं होती तो पुरूष उसे नीचा दिखाने के लिए तथा उस पर शासन करने के लिए अंतिम अस्त्र के रुप में पत्नी के चारित्र्य पर संदेह करके उसे परास्त करता है। युगों-युगों से पत्नी पति से पीड़ा ही पाती आयी है।

ग. परित्यक्ता नारी का जीवन :-

वर्तमान युग में महानगरों की तरह देहातों में भी नारी शिक्षा प्राप्त करने लगी हैं। शिक्षा को कारण उसके ज्ञान में वृद्धि हो गई और वह अपने अधिकार के बारे में सजग हो गई है। अब नारी घर से बाहर निकल चुकी है, वह आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने लगी है। वह बिना वजह पति के अत्याचार नहीं सहती, उसका पुरजोर विरोध करती है। पति के बराबर अधिकार की सहभागी होती है। उस पर अगर पति

या परिवार के किसी सदस्य द्वारा अत्याचार किए जाते हैं या उसे अपमानित किया जाता है, तो उन अत्याचारों और अपमानों से तंग आकर नारी अदालत में जाकर तलाक लेती है तथा स्वतंत्र रूप से अपना जीवन बिताती है। योगेश सूरी के अनुसार -``किसी भी कारण वश जब ऐसी स्थिति आती है कि पति-पत्नी आपस में मिल-जुलकर रहने में असफल हुए तो ऐसे दु:खमय वैवाहिक जीवन से सदा के लिए छुटकारा पाने के लिए अदालत की सहायता से सामाजिक नियमों के अनुसार आपसी वैवाहिक संबंध को तोड़ देते हैं।``[30] अत: स्पष्ट है कि पति के साथ कलह वाली स्थिति पैदा होने पर आज की नारी तलाक लेकर पति को छोड़ देती है और स्वतंत्र रूप से अपना जीवन यापन करती है।

नारी के परित्यक्ता होने पर भले ही दोष पति का हो समाज नारी को ही दोषी ठहराकर उस पर उंगली उठाता है। परित्यक्ता नारी अगर आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो तो उसका जीवन पति के बिना भी सुकर बन सकता है ताकि वह खुद पर निर्भर होती है। परंतु ऐसे वक्त अगर नारी आर्थिक दृष्टि से दूसरे पर आवलंबित हो तो उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें न तो मैके में कोई इज्जत मिलती है और न समाज में। उस पर भी अगर नारी ने घरवालों के खिलाफ जाकर प्रेम विवाह किया हो तो उसे कहीं भी सहारा नहीं मिलता वह भटक जाती है। ऐसी नारी जादा तर अपना जीवन व्यतित करने के लिए वेश्यावृत्ति जैसे घृणित कार्य को अपनाती है। रामदरश मिश्र द्वारा लिखी कहानी `हद से हद तक` की नायिका पिता और बहन के अत्याचारों से तंग आकर तथा पुरुषों के प्रति अपने आकर्षण को न रोक सकने के कारण वह निम्न जाति के एक आदमी के साथ भाग जाती है और उसी के साथ शादी करके रहने लगती है। उसके एक बेटी भी होती है। कुछ दिनों बाद पति-पत्नी में कलह निर्माण होता है। पति का उसके प्रति आकर्षण कम होने पर पति उसे अकेली छोड़ तथा लड़की को बेचकर कही चला जाता है। पति के चले जाने के उपरांत उसे अपना किराए का मकान भी छोड़ना पड़ता है, अत: वह दर-दर की ठोकरे खाकर, पेट की आग बुझाने के लिए भिख मांगते-मांगते अपने मैके पहुंचती है। मैके में पिता और बड़ी बहन के डर से वह घर नहीं जाती और मंदीर के पास भिखारियों की पंक्ति में बैठकर मिले हुए प्रसाद से अपना पेट भरती है। जैसे -``मंदीर के सामने भिखारियों की भीड़ लगी थी। लोग मंदीर से निकल-निकल कर भीड़ को प्रसाद और पैसे बांट रहे थे। भूखी थी। भूख और तेज हो आयी। लाइन में किनारे की ओर बैठ गयी। लोगों से प्रसाद पाती गयी, खाती गयी, थोड़ी सी राहत मिली।``[31]

मंदीर में पहचानी जाने के बाद वह बाकायदा वेश्यावृत्ति करने लगती है ताकि घर में पिता

के रहते प्रवेश करेन की बात भी नहीं सोच सकती। पिता तो कभी-कभार मां के साथ बात करते देखता तो उसके साथ मां को भी गालियाँ देता तथा पीटता है। वेश्या व्यवसाय करके वह अपना पेट और शरीर की भूख दोनों ही मिटाती है। उसके दिन मजे में गुजरते थे परंतु जल्दी ही वह इस धंदे से उब जाती है, अपने में एक प्रकार की थकान महसूस करने लगती है। उसे लगता है -``उसकी आग ठंडी होती जा रही है। घर लौट जाती है तो थक जाती, देह टूटने लगती। इच्छा हो या न हो, उसे मशीन की तरह ग्राहक की मर्जी पर तैयार होना पड़ता ही है। ऊपर-ऊपर सजती जा रही है, भीतर-भीतर खाली होती जा रही है।``[32]

इस बात से स्पष्ट होता है कि घरवालों की मरजी के खिलाफ शादी करने पर बाद में उस औरत को मैके में किसी भी प्रकार का सहारा नहीं मिलता आखिर मजबूर होकर प्रस्तुत कहानी की नायिका की तरह उसे भिख मांगकर या फिर वेश्यावृत्ति करके अपनी जीविका चलानी पड़ती है। बाद में जब पुलिस का छापा पड़ता है तो नायिका को मकान मालिक मकान से बाहर निकाल देता है। सभी लोग उस पर ताने कसते हैं, उसका मजाक उड़ाते है।

कई बार ऐसा भी होता है कि आपसी तनाव, घर की झूठी शान और परंपरा के कारण पति-पत्नी को अपनी इच्छा के विरूद्ध अलग रहना पड़ता है। ऐसे समय अगर पति-पत्नी एक-दूसरे से सच्चा प्यार करते हैं तो एक-दूसरे को याद करते-करते तड़फ-तड़फ कर मर जाते हैं। नासिरा शर्मा की लिखी `दस्तक` कहानी में लेखिका ने काजिम और शबाना को खानदानी मान-मर्यादा की खातिर अलग होकर मरते हुए दिखाया है। शबाना सोचती है -``हम खानदानी मान-मर्यादा का कब्रिस्तान हैं जहां पर हमेशा एक नयी कब्र खुदती है और बुजुर्गों की इच्छाओं के कफन में लिपटी लाश गड दी जाती है।``[33] इन्हीं मान-मर्यादाओं के कारण अनेक नारियों का जीवन ऊध्वस्त होता है। पहले-पहले अलग होने पर भी काजिम और शबाना चोरी-छूपे पास वाले खंडहर में मिलते रहते हैं परंतु शबाना के चाचा के देखने पर वे मुलाखाते भी बंद होती हैं। काजिम की याद में शबाना बीमार पड़ जाती है। ये जानते हुए भी कि उसके दर्द की दवा काजिम है, उसके घरवाले उससे काजिम को मिलवाने की बजाय शहर में डॉक्टर के पास ले जाते हैं। लेकिन शहर जाते समय भी उसके मन में एक ही तमन्ना होती है और वो है अपने प्रिय पति से मुलाकात। जैसे ``शहर जाने से पहले उन्हें एक नजर देख ले।``[34] इस बात से स्पष्ट है कि शबाना काजिम से अपनी जान से भी जादा चाहती है। कभी-कभी तो शबाना सपने में काजिम को देखकर ही अपनी कामना पूरी करती है। आखिर घरवालों की कठोरता के कारण शबाना अपने पति से मिलने के लिए

तड़प-तड़प कर मर जाती है। अत: हम कह सकते हैं कि परित्यक्ता नारी का जीवन अत्यंत दयनीय अवस्था में गुजरता है। कई एक शबाना की तरह पति की याद में घूल-घूलकर मर जाती है तो कई एक `हद से हद तक` की नायिका की तरह पति और मैके से बेसहारा होकर अपना जीवन यापन करने के लिए पहले भिखारी और बाद में वेश्या बनती है। यही परित्यक्ता नारी जीवन की कहानी है।

एक-से अधिक मर्दों में बटी नारी का जीवन :-

कभी-कभी नारी को पुरुषों की काम-लोलुप वृत्ति के कारण घर ही के कई पुरुषों के आगे वेश्या की तरह मजबूरन अपना शरीर पेश करना पड़ता है। अपनी तथा परिवार की इज्जत की खातिर नारी चूपचाप पुरुषों को शरीर और मन-मस्तिष्क पर झेलती रहती हैं। बूटा सिंह द्वारा लिखी कहानी `तीन सतियाँ` इसी बात को उजागर करती है।

कहानी की नायिका सत्यारानी अपने पति और बुढ़े काम-लोलुप ससूर में बट जाती है। ससूर की इच्छा भांप कर जब वह उसका विरोध करती है तो ससूर उसे धमकाते हुए कहता है - ``सत्तो की बच्ची, ज्यादा तिड़-तिड़ की तो गली का तिनका बना के फैंक दूंगा। मांगती कोई भीख नहीं डालेगा---- मखमली गद्दों पर लेट और मस्ती से जिंदगी गुजार --- इन कोठियों कारखानों की तू ही मालकिन है ---- कल तेरे लिए हीरों का सैट लेकर आऊंगा।``[35] इस प्रकार धमकाने पर मजबूरन सत्यारानी अपने ससूर की सेज सजाती है। चाहकर भी वह अपने ससूर का विरोध नहीं करती। धीरे-धीरे वह ससूर और पति दोनों की काम-वासना तृप्त करनेवाली वेश्या बन जाती है। दिन भर ससूर को अपने शरीर पर झेलती है और रात में अपने पति को। उसकी हालत उस वेश्या की तरह हो जाती है जो एक ग्राहक से निपटकर सज-धजकर दूसरे ग्राहक का इंतजार करती है। वह खुद अपने बारे में कहती है - ``मैं हौले-हौले उस वेश्या-सी होती गई, जिसे हर वक्त बन-संवरकर अपने चाहनेवालों की प्रतीक्षा रहती है।``[36] अत: स्पष्ट है कि सत्यारानी अपने पति और ससूर की काम तृप्ति में बंट जाती है।

सत्याराणी बेटे की शादी होने तक ससूर और पति को अपने दिल और दिमाग पर झेलती रहती है और अंत में बीमार पड़ जाती है। जो ससूर और पति उसकी सुंदरता की तारिफ करते नहीं थकते थे, हर वक्त सत्यारानी-सत्यारानी करके उसके आगे-पीछे घुमते रहते थे, बीमार पड़ने पर उसे तीसरी मंजिल पर बरसाती में अकेली को फेंक देते हैं। ससूर और पति तो क्या उसका अपना बेटा भी उसका हाल पुछने तक को नहीं आता। वे तीनों मर्द अब सत्यारानी की बहू भोला के आगे-पीछे घुमने लगे हैं। हर वक्त उसकी

तारिफ करते रहते हैं। साथ-ही-साथ उसकी इच्छा के विरूद्ध उसे भोगते भी हैं। अत: भोला भी अपनी सास की तरह घर के तीन -तीन मर्दों की हावस मिटाते-मिटाते घर में वेश्या का जीवन बिताती रही है। नारी की इस व्यथा के बारे में धर्मपाल के विचार है - ``नारी-सौंदर्य से जीवंत रहने तथा पुलकित होनेवाले पुरुषों ने, नारी को अपनी कामाग्नि शांत करने का साधन समझ लिया। वह अपनी शक्ति, शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन करके नारी को भयाक्रांत रखने लगा।``[37] बिल्कुल यही बात बहू और सास के बारे में घटित होती है। उन्हें घर ही के मर्द डरा-धमकाकर अपनी हवस मिटाते हैं। इस बात से तंग आकर प्रगत विचारोंवाली पढ़ी-लिखी भोला त्रस्त होकर उनसे बदला लेने की बात सोचती है। वह क्रोध में आकर सत्याराणी और उसकी सास को कहती है - ``मांजी, तुम्हारा खसम एक था, मेरी सास के दो-दो और मेरे तीन-तीन। एक साल होने को है, इन तीनों को दिलो दिमाग और जिस्म पर झेलती रहती हूँ। पर अब मैंने फैसला कर लिया है कि इस नक्कारखाने में तड़पती रूहें चूप नहीं रह सकती, चूप नहीं रह सकेगी।``[38] इस बात से स्पष्ट होता है कि तीन-तीन मर्दों को अपने शरीर पर झेलने के कारण त्रस्त होकर उन्हें मिटाने का फैसला करती है और साथ में अपनी सास तथा सास की सास को भी अपने साथ आत्महत्या करने का सुझाव देती है। ``जब नारी की अस्मिता पर आंच आती है तो वह प्रतिशोध लेती है और उस पुरुष को नीचा दिखाती है जो उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाता है।``[39] अत: स्पष्ट है कि नारी पर जब पुरुषों के अत्याचार परिसीमातक बढ़ जाते हैं तो नारी बगावत पर उतर आती है। जब नारी इस स्थिति में पहुंचती है तब वह अत्याचारी का नाश करती है या फिर अपने-आप को मिटाती है।

पति अगर कमजोर हो और औलाद पैदा करने में समर्थ न हो तो पत्नी किसी करिबी पुरुष से अपने संबंध स्थापित करती है। कई बार तो पति-पत्नी दोनों की सम्मति से पत्नी को गैर मर्द के साथ शारीरिक संबंध रखने पड़ते हैं। अत: इस कारण भी नारी दो पुरुषों में बट जाती है। असमर्थ पति द्वारा पत्नी को किसी और पुरुष से संतति प्राप्त करने के लिए भेजने के उदाहरण प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति में मिलते हैं। जैसे - ``प्राचीन काल में नारी अविवाहित रही हो अथवा विवाहिता, पुरूष ने उसकी स्वच्छंदता में कोई बाधा उत्पन्न नहीं की ---। यहां तक कि पति स्वयं अपनी विवाहिता पत्नी को बाध्य कर देते थे कि वह विशिष्ट गुणवाले किसी अन्य पुरुष से सहवास कर तथागुणी पुत्र उत्पन्न करे।``[40] इसी बात की पुष्टि करती नफीस आकरीदी द्वारा लिखी कहानी `दौड` में जोगना का पति भीमा काछी नामर्द है। वह अपने लिए वारीस हो इस इच्छा के कारण अपने दोस्त `मालवा` को पत्नी के बिस्तर पर भेजता है। जोगना

नींद में थी उसी वक्त मालवा आकर उसे दबोचने लगता है। जोगना समझ जाती है कि भीमा के अलावा उसके पास कोई और आया है, अत: विरोध करती है, दरवाजे की कुंडी खटखटाती है परंतु सबकुछ व्यर्थ क्योंकि दरवाजा बाहर से बंद किया था। इसी कहानी से - ``अपने ऊपर हल्का-सा दबाव महसूस किया। सूखी पतली बाहें और हड्डिया हुआ मीना। --- जोर से धक्का और लपककर कुंडी गिरादी लेकिन किवाड नहीं खुले बाहर से कुंडी चढ़ी हुई थी। भूसे के ढेर पर पड़ा आदमी जोर- जोर से हंस रहा था। वह मालवा छीपा था।``[41] मालवा छीपे की हिम्मत और उसका अट्टाहास इस बात का सबूत है कि वह भीमा से नहीं डरा और भीमा बाहर सोता था अत: उसके न चाहते कोई भी आदमी अंदर नहीं आ सकता। इन सभी बातों का तात्पर्य यही है कि भीमा खुद संतान की कामना से मालवा को अपनी पत्नी के पास भेजता है। इस दिन के बाद जोगना अपने पति भीमा काछी और उसके दोस्त मालवा छीपा में बट जाती है। पति के रूप में कभी भीमा तो उसके बच्चे के बाप के रूप में मालवा छीपा उसकी अस्मत लुटते है। तकदिर की मारी जोगना दोनों को अपने शरीर पर चूपचाप झेलती रहती है, उनका विरोध नहीं करती। उसकी इस स्थिति का वर्णन करते कहानीकार ने लिखा है - ``भीमा काछी और मालवा छीपा दो अलग अलग तरह के गिद्ध थे। एक उसे बेरहमी से फेंकता था. दूसरा मांसभोगी जानवर की तरह चिचोडना -भंभोडना शुरु कर देता था।``[42] इस बात से स्पष्ट है कि पिता बनने की इच्छा से भीमा अपनी पत्नी की इच्छा के विरूद्ध, जबरदस्ती पत्नी को दबाकर अपने दोस्त मालवा के साथ सुलाता है।

कुछ समय बाद जोगना एक बच्चे की मां बन जाती है। वह अब मालवा का विरोध करती है परंतु मालवा भीमा की मौजूदगी में ही उसके साथ छेड-छाड करता है, तथा बच्चे पर भी अपना अधिकार जताने लगता है। इस बात से तंग आकर जोगना उसे पीटती है, तो वह मुहल्ले के लोगों को बुलाता है। अपना भंड़ा फोड न हो तथा गांव में इज्जत बची रहे इसी कारण जोगना मालवा की माफी मांगती है और इस दिन से वह पूर्णत: बदल जाती है। मालवा छीपा के हर अत्याचार को चूपचाप सहती है। जैसे-``उस दिन के बाद वह एकदम बदल गई मालवा छीपा ने उसे परास्त कर दिया था। उसके भीतर डर के झाड़-झंखाड़ उग आये थे। सांझ घिरते ही वह नशे में झूमता हुआ आता चिल्लाकर रोटी मांगता। देर होती तो गालियों की झड़ी लगा देता। वह ओबरी में पड़ी होती तो धड धडाता हुआ घुस आता और कुंडी चढा लेता।``[43] जोगना अपनी तथा भीमा की इज्जत बचाए रखने के लिए उसके सभी अत्याचार चूपचाप सह लेती है। जोगना के इस बदलाव के कारण भीमा परेशान होकर जोगना के साथ झगड़ता रहता है, बच्चे को

मार डालने की धमकी देता है। और एक दिन तो उसे लेकर भाग ही जाता है। जोगना उसे ढूंढने के लिए दिन-रात दौड़ने लगती है।

उपरोक्त कहानियों के अध्ययनोपरांत यह स्पष्ट होता है कि नारी जब अपनी इच्छा या अनिच्छा से पति के साथ-साथ किसी अन्य पुरुष से भी जूड़ी रहती है तो आगे चलकर उसे दोनों तरफ से दी जानेवाली यातनाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी नारी का जीवन अत्यंत दीन, हीन तथा कष्टमय होता है, जिसे जीना उसकी मजबूरी है।

घ. नौकरी पेशा नारी का जीवन :-

वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक मान्यताओं में भी परिवर्तन होने लगे हैं। स्वतंत्रपूर्व काल में घर से बाहर कदम न रखनेवाली नारी शिक्षा तथा नौकरी के कारण घर से बाहर आ गयी है। अनेक महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा लेकर वेपुरुषों की बराबरी करने लगी हैं। परंतु परंपरावादी पुरुष अपनी हीन भावना के कारण अभी तक नारी को उसके अधिकार नहीं देता है, और नहीं उस पर अपना अधिकार जमाने की प्रवृत्ति को छोड़ रहा है। धर्मपाल के विचार से - ``पति से समक्ष योग्यता रखनेवाली तथा पति की आय के बराबर अथवा अधिक आय अर्जित करनेवाली कुशल गृहिणी होते हुए भी कभी-कभी पति के तिरस्कार एवं भद्दी गाली गलौच का पात्र बनना पड़ता है जिसे वह सहन कर लेती है परंतु वैसी गालियां अथवा अपमान जनक भाषा का वह प्रयोग नहीं कर पाती। यदि ऐसा किया भी तो उसे मारा पीटा जाता है।``[44]

नौकरी करनेवाली नारी अपने अधिकार के बारे में सजग रहती हैं। पति की तरह घर में धन कमाकर लाने के कारण वह चाहती है कि पति भी उसकी घर के काम-काज में मदद करें परंतु परंपरावादी विचारों के अहंभावी पति समझते हैं कि घर का कामकाज करने के लिए सिर्फ नारी ही होती है। खुद उसकी मदद करना वे अपना अपमान समझते हैं। कर्तारसिंह दुग्गल द्वारा लिखी कहानी `करवाँ चौथ` में चित्रित नायिका गीतांजली नौकरी करती है। शिक्षित होने के कारण वह समाज की झूठी मान्यताओं को नहीं मानती। वह पति की लंबी आयु के लिए अन्य भारतीय नारी की तरह `करवाँ चौथ का व्रत` भी नहीं रखती। जैसे - ``हर वर्ष, यूं ही होता था, जब से उसकी शादी हुई थी। जमीर का तकाजा। लेकिन उसने कभी इस तरह के झंझट नहीं पाले थे।``[45] इस बात से स्पष्ट होता है कि गीतांजली रूढ़ि और परंपरा को स्वीकारने वाली नारी नहीं है। उसके विचार इन पारंपारिक रीति रिवाजों को मानने के लिए उसे प्रेरित

नहीं करते। ऐसी आधुनिक नारी के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए घनश्यामदास भुतड़ा जी लिखते हैं ``आज नारी व्यवहारिक जीवन को ही महत्त्वपूर्ण मानकर जीवनयापन करने लगी है। पुनर्जन्म अथवा `सात जन्मों तक यही पति मिले` वाली बातों में उसकी आस्था समाप्त होने लगी है। इस अवस्था को वह महज एक ढोंग तथा अपने प्रति किए जानेवाले शोषण का एक अंग मानने लगी है।``[46] गीतांजली इसी प्रकार की नारी है। वह चाहती है कि वह नौकरी करती है और घर में धन कमाकर लाती है तो पति भी उसकी घर के कामकाज में मदद करें। वह अपनी सहेली तथा सहकर्मचारी जीतां से कहती है - ``कभी तुमने यह भी सुना है जीतां कि मर्द का काम सिर्फ औलाद पैदा करना है ? मल-मूत्र के लिए बस मां होती है। मैंने उससे कहा, `मियां ! तुम्हें भी दफ्तर पहुंचना होता है और मुझे भी। तुम भी तनख्वाह पाते हो, मैं भी। मेरी तनख्वाह तुमसे चार पैसे कम ही सही। सुबह, एक बच्चे को तुम तैयार कर दिया करो, दूसरे को मैं संभाल लूंगी।``[47]

साधारण तथा शिक्षित एवं पढ़ी-लिखी नारी अपने पति की कुछ आदतें पसंद नहीं करती जैसे खाते समय ठोढ़ी हिलाना, बच्चों से ज्यादा प्यार करना, घर में दफ्तर का कामकाज देखना वो भी घर ही के फोन पर फाइलों की चर्चा करके, काम के समय समाचार पत्र पढ़ना आदि पति की आदतों का पत्नी विरोध करती है। गीतांजली भी अपने पति की इन आदतों पर उसे हमेशा टोकती रहती है। परिणामत: दोनों में हमेशा झगड़े होतें रहते हैं। इसी तरह जब नसबंदी करने की बात चलती है तो दोनों में विवाद होता है। गीतांजली चाहती है कि पति अपनी नसबंदी करवा ले परंतु पति डरते हैं और उसे ही अपनी नसबंदी करवा लेने का परामर्श देते हैं। इसी प्रकार की विचार भिन्नता के कारण गीतांजली अपने पति से कभी-कभी पीटती भी रहती है।

नौकरी करनेवाली नारी को अपने कार्यालय में काम करनेवाले अधिकारियों की सेवा भी करनी पड़ती है। ऐसी नारियों को अपनी स्थाई नौकरी के लिए अपने अधिकारियों की कामवासना का शिकार भी बनना पड़ता है। कुछ नारियों को तो अपने ही सहकर्मियों द्वारा किए सामूहिक बलात्कार को भी चूपचाप सहना पड़ता है। नछत्तर द्वारा लिखी कहानी `अंदर का आदमी` में अजैब भैणजी अपने ही साथी अध्यापकों के सामूहिक बलात्कार का शिकार बन जाती है। जैसे -``अजैब भैणजी ने सिर झुका लिया मानो हामी भर रही हो ! वह अंदर चली गयी। सब मुस्करा दिये --- और फिर हिचकोले-से खाते नाजर, हंसराज और दलीप बारी-बारी अंदर जाकर वापस आ गये। --- और वह भी अजैब भैणजी के

आगोश में समाकर लौट आया था।``[48] इतना होने के बावजूद भी अजैब भैणजी किसी के सामने मुँह नहीं खोलती। अपने पर हुए अत्याचार को भुलकर दूसरे दिन भी रोजना की तरह काम पर आती है।

प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट है कि नौकरी करनेवाली नारी को अपनी इज्जत तथा शील का मोल चुकाकर भी नौकरी करनी पड़ती है। उसका व्यक्तित्व दो भागों में बट जाता है, एक घर और दूसरा कार्यालय। इन दोनों स्थानों पर अपने आरोग्य की चिंता किए बिना नारी अपना कार्य करती रहती है। पति तो सिर्फ कार्यालय में नौकरी करके अपने कर्तव्य से मुक्त होता है परंतु पत्नी को नौकरी और परिवार दोनों को संभालने के लिए अथक परिश्रम करना पड़ता है। इस तरह वह पति की अपेक्षा कई जादा मेहनत करती है। ``तुलनात्मक दृष्टि से इस प्रकार नारी द्वारा किये गये काम पुरुष से अधिक ही है। पुरुष को आराम मिल जाता है। नारी को आराम कहां ?``[49] अत: स्पष्ट है कि नारी पुरुष की अपेक्षा कई जादा काम करती है। नौकरी और घर दोनों जगह अथक परिश्रम करने के बावजूद उसे हर तरह से प्रताड़ित और पीड़ित किया जाता है।

ङ माता-पिता द्वारा पीड़ित लडकी का जीवन :-

माता-पिता का कर्तव्य होता है कि अपनी संतान की अच्छी तरह से परवरिश करें, उन्हें पढ़ाए, लिखाएं और इस काबिल बनाएँ कि वह आगे चलकर अपने बलबुते पर अपने जीवन का भार खुद उठाएँ। परंतु कुछ माता-पिता अपने बच्चों की परवरिश करने की अपेक्षा उन्हें मारते-पीटते हैं, उनसे नफरत करते हैं। कुछ अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण और कुछ व्यसनाधीनता के कारण अपनी संतानों पर अत्याचार करते रहते हैं। माता-पिता के अत्याचार जादा तर लडकियों पर ही होते हैं क्योंकि पुरुष प्रधान भारतीय संस्कृति में लड़के को प्रधानता दी जाती है।ऐसी कितनी ही लड़कियाँ जो माता-पिता के अत्याचारों से पीड़ित हैं, उनके प्यार के लिए तरसते हैं। ये लडकियाँ दयनीय और असहनीय पीड़ा में अपना जीवन बिताती हैं। उनका जीवन अत्यंत नीरस और नीरित होता है तथा मानसिक रोगों से ग्रस्त ये लडकियाँ किसी मनोविज्ञान के डॉक्टर के इलाज की अभिलाशी होती हैं। जैसे - ``मेरे मित्र ने मुझे बताया कि उस संस्था में जो उपचार केंद्र होने के अलावा, एक पुनर्वासन -केंद्र भी था, एक सौ पचास से भी अधिक ऐसी बच्चियाँ और किशोरियाँ रहती हैं, जो अपने माता-पिता के अत्याचारों के कारण उस संस्था में आयी हैं, और जिन्हें किसी मानस-रोग विशेषज्ञ के उपचार की जरूरत है।``[50] इस बात से स्पष्ट होता है कि माता-पिता द्वारा पीड़ित लडकियों की कमी नहीं है।

रिचर्ड द अंब्रेसियो की कहानी `बेकसी के आगे` में चित्रित लोरा के माता-पिता निर्धन होने के साथ-साथ शराबी भी हैं। अक्सर शराब के नशे में धुत्त होकर वे लोरा को पीटते रहते हैं। हर दिन मां-बाप से पीटने के कारण लोरा गुमसुम रहने लगती है। हमेशा से डरी सहमी रहने लगती है। लोरा के माता-पिता अपने पर लोरा एक बोझ-सा समझते हैं, अत: उसे एक चकला चलानेवाली औरत के हाथों बेच देते हैं। जब लोरा जाने के लिए नकार देती है तो उसे गर्म तवे पर बिठाया जाता है। ऐसे अत्याचारों को सहते-सहते लोरा मानसरोग की शिकार होती है, वह हमेशा अकेली रहती है, किसी से बात तक नहीं करती। उसकी इस अवस्था का कारण बताते हुए लेखक कहते हैं - ``उसके माता-पिता दोनों शराबी थे, और दोनों उसे शराब के नशे में धुत्त होकर बुरी तरह पीटा करते थे। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो, जब उसे अपने माता-पिता की मार न खानी पड़ी हो। उसे भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था, क्योंकि एक तो उसके माता-पिता बहुत निर्धन थे, और दूसरे शराब के नशे में धुत्त होने के कारण ----। ``[51] इस बात से स्पष्ट है कि लोरा ने रोटी की अपेक्षा अपनी माता-पिता की मार ही जादा खायी है। वह हर किसी से डरी सहमी रहती है, कोई गलत इरादे से पास आने लगे तो चिल्लाने लगती है तथा कोई प्यार से पास बुलाए तो वह सिर्फ उसे देखती रहती है। उसका चेहरा पत्थर की तरह निर्विकार-सा प्रतित होता है।

रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की नायिका के पिता सिर्फ पैसा कमाने के लिए अपनी बेटियों से मशीन की तरह काम करवाता रहता है। बड़ी बेटी तो बाप का हर आदेश मानती है परंतु कथा नायिका पढ़ना चाहती है अत: काम न करने के कारण पिता तथा बड़ी बहन से पीटती रहती है। पिता के हर दिन पीटने के कारण वह उससे नफरत करती है। जैसे -``साला बाप है कि कसाई --- लड़कियों के बलबुते पर अमीर बनने का सपना देखता है। यह कभी सोचा ही नहीं है कि लड़कियाँ मशीन नहीं आदमी है।``[52] अत: स्पष्ट है कि नायिका का पिता धन प्राप्ति के हेतु बलपूर्वक अपनी बेटियों से काम करवाता है। और न करने पर उसे पीटता है। बेटियाँ शादी के काबिल हो जाती है, परंतु उनकी शादी नहीं कराता। जवान नायिका अपनी यौन-पीडा से त्रस्त आते-जाते लोगों को देखकर अपना दिल बहलाती है, कभी-कभार उन्हें इशारे भी करती है। इस बात को बड़ी बहन देखती है और पिता को बताती है बाद में उसे दोनो मिलकर पीटते हैं। इस अत्याचार से तंग आकर नायिका निम्न जाति के आदमी के साथ भाग जाती है। एक बेटी को जन्म देने के बाद उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है। अत: अपनी भूख मिटाने के लिए वह पहले भिखारी और बाद में वेश्या बन जाती है। उसके दिल में मां से मिलने की तमन्ना होती है

परंतु बाप मिलने नहीं देता अत: बाप के सामने ही ऐसा बर्ताव करती है कि बाप तिलमिला उठता है। जैसे `वह अब सिगरेट पीती नहीं थी, केवल बाप के सामने पीने के लिए दो-एक सिगरेट जेब में रखती थी।``[53] इस बात से स्पष्ट है कि माता-पिता से पीड़ित होकर लड़कियाँ पतन की ओर बढ़ती है, तथा वेश्या बदचलन औरतों जैसा जीवन बिताती है।

च. बाल विवाहित नारी का जीवन :-

समाज में रहनेवाले कामलोलुप भेडियों से बचाने के लिए भारतीय संस्कृति में बचपन ही में बेटियों के ब्याह रचाने की परंपरा थी। जिन लडकियों को शादी-ब्याह, पति-पत्नी का मतलब भी नहीं समझता ऐसी लड़कियों के ब्याह किये जाते थे। आज भी अनेक लड़कियों के दहेज के डर से बचपन में विवाह किए जाते हैं। योगेश सूरी के अनुसार -``जब माता-पिता अपनी लड़की को दहेज नहीं दे पाते और समाज में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए या लड़की की देखभाल से छुटकारा पाने के लिए भी कभी कभी वृद्ध पुरुष के साथ उसके जीवन की गाँठ बाँध देते हैं।``[54] तात्पर्य यह कि आर्थिक विपन्नता के कारण बेटियों की कम आयु में तो शादियाँ हो ही जाती है परंतु कई बार ऐसा भी होता है कि उन लडकियों की शादी अपने पिता की आयु के बराबरवाले आदमी के साथ की जाती है। जगवीर सिंह वर्मा की कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` इसी बात को स्पष्ट करती है। पति के मरनोपरांत सुदामा अपनी तथा अपनी बेटी की सुरक्षा हेतु बेटी का हाथ कम आयु में ही रामप्रसाद के हाथ में देती है। परसादी छोटी, नासमझ होने के कारण अपने पति-पत्नी के रिश्ते से अंजान वह अपने पति में ही पिता की छबी देखती है। जैसे - ``परसादी को भी लगता है, रामप्रसाद नहीं बहोरन आ गया है।``[55]

वास्तविक रूप में परसादी की उम्र खेलने-कूदने की, स्कूल जाने की, हम उम्र लड़कियों के साथ मस्ती करने की है परंतु इसी उम्र में शादी होने के कारण उसे घर से बाहर जाने नहीं दिया जाता। वह अकेली अपने-आप में घुटन-सी महमूस करती है। वह रामप्रसाद के अपेक्षा अपने हम उम्र लडके की तरफ खिंचती है। वह रामप्रसाद से नफरत करती है उसे उसकी घिन आती है। वह रामप्रसाद के साथ सोना नहीं चाहती परंतु उसे सोने के लिए मजबूर किया जाता है। उसकी उम्र तो मां के आंचल के नीचे सोने की है। पति नाम के शब्द से वह परिचित ही नहीं तो कैसे उसके परिवेश को समझे। अत: रामप्रसाद के सोने के बाद ही वह उठकर अपनी मां के पास सोने के लिए जाती है। वह अपनी मां से कहती है, ``मां, मां, मोकु अपने ढिंग सुवाय ले, गो तो खर्राटे भार के सोय रहयो है, और जन का बडबडाय रहयो है।``[56] इस बात

से स्पष्ट है कि परसादी अभी नासमझ है और शादी-ब्याह के बारे में अंजान है। फिर भी मां के कहने पर रामप्रसाद को अपना पति मानती है।

छ. कामासक्त नारी का जीवन :-

सेक्स मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। पेट भरने के बाद मनुष्य को काम-पीड़ा सताने लगती है अत: वह काम तृप्ति के साधन ढूंढने लगता है। इस संबंध में योगेश सूरी के विचार है- ``काम जीवन की एक सहजात प्रवृत्ति है। मनुष्य तो मनुष्य पशु-पक्षियों में भी यह प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे पेट की भूख जन्मजात है वैसे सेक्स भी जन्मजात है, पेट की भूख की तृप्ति जैसे अनिवार्य है वैसे ही सेक्स की तृप्ति भी अनिवार्य है।सेक्स की अतृप्ति जीवन में समस्याएँ खड़ी कर सकती है। वह जीवन के विकास में बाधा स्वरूप होती है इससे मनुष्य मानसिक तथा शारीरिक विकास पर भी कुप्रभाव पड़ता है।``[57] सूरी के इस विचार से मनुष्य जीवन में सेक्स का महत्त्वपूर्ण स्थान स्पष्ट होता है। युवावस्था को प्राप्त करते ही मन में विषम लिंगी व्यक्ति के प्रति आकर्षण बढ़ता है। भारतीय संस्कृति में शादी के पहले `काम-तृप्ति` पाप समझा जाता है फिर भी कुछ युवक वेश्याओं के पास जाकर तृप्त होते हैं। यह स्थिति नारी के लिए इतनी सरल नहीं होती। अत: नारी अपनी काम-वासना को दबाए रखती है। कुछ नारियाँ काम-ज्वर से पीडित होकर गलत कदम भी उठाती हैं। किसी पुरुष के साथ यौन-संबंध रखती है या फिर उसके साथ भाग जाती है और शादी करती है। रामदरश मिश्र द्वारा लिखी कहानी की नायिका रंग-रूप से बदसूरत है फिर भी उसमें काम-वासना उच्च कोटि की है। वह चाहती है कि कोई उसे प्यार करे, उसके तन-बदन में लगी वासना की आग को शांत करे। रास्ते पर आते-जाते सुंदर लडकों को देखकर वह और भी बेचैन होती है। सुंदर जवान लडकों को देखकर प्यासे ओठों पर जबान फेरती रहती है। जैसे ``वह सुंदर जवान लडकों को सामने से जाते देखती तो उसके भीतर तूफान उठ खड़ा होता। इच्छा होती उसे बुलाये और छाती में दबाकर तोड़ दे।``[58] इस बात से स्पष्ट होता है कि नायिका काम ज्वर से कितनी पीड़ित है। अंत में अपनी काम-पीडा के कारण मजबूर होकर वह एक आदमी के साथ भाग जाती है। बाद में वह आदमी भी उसे छोड़ देता है तो वह वेश्या बन जाती है।

काम-वासना तृप्ति के लिए कुछ युवतियाँ अपने ही समान किसी सहेली की मदद लेती है। मंटो द्वारा लिखी `धुंवा` कहानी में कलसूम और विमला एक-दूसरों के गुप्तागों को सहलाकर काम-वासना तृप्त करती है। जैसे `मसअद ने देखा था कि विमला की चोली के बटन खुले हुए थे और कलसूम

उसके वक्ष को छू रही थी।``[59] इस प्रकार का समलिंगी संभोग वे औरते भी करती है जो अपने पति से संतुष्ट नहीं होती और किसी दूसरे पुरूष के संपर्क में आने की उन्हें सहुलियत नहीं होती। ऐसी नारियों में जादा तर बड़े घरों की औरते होती है, जिनके पास सुख-सुविधा के तमाम साधन होते हुए भी वे यौन सुख न मिलने के कारण परेशान रहती है। जब वह किसी स्वस्थ पुरुष को देखती है तो उसकी वासना और भी उद्दिप्त होती है। ईस्मत चुगताई की लिखी कहानी `लिहाफ` की नायिका बेगमजान की मनस्थिति के बारे में लेखक बताते हुए कहते हैं - ``बेगमजान दीवान खाने के झरोखों में से उन लचकती कमरवाले लड़कों की तनी हुई पिंडलियों और इत्र में बसे पारदर्शी शबनम के कुर्ते देख-देखकर अंगारों पर लोटने लगी।``[60] इस बात से पता चलता है कि बेगमजान अपने पित से असंतुष्ट है और जवान लड़कों को देखकर उसकी काम-वासना अधिक भड़क उठती है।

बेगमजान घर की पाबंदियों के कारण कही आ-जा नहीं सकती अत: वह अपनी नौकरानी रब्बू से ही अपना बदन मसलवाकर तृप्त होने का प्रयास करती है। वह जब चाहे नौकरानी से अपने बदन की मालिश करवाती है। रात में भी नौकरानी के साथ एक ही बिस्तर में सोती है। रब्बू उसके पूरे शरीर की मालिश करती थी। अत: रब्बू नहीं होती तो वह परेशान हो उठती ताकि रब्बू के अलावा कोई नहीं जानता था कि क्या करने पर बेगमजान की खुजली मिटती है तथा उसे सुख प्राप्त होता है। जब रब्बू अपने बेटे से मिलने जाती है तो बेगमजान की हालत का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं - ``सारा दिन बेगमजान परेशान रहीं। उनका जोड़-जोड़ टूटता रहा। रब्बू के अलावा किसी का जरा-सा छूना भी उन्हें नहीं भाता था, उन्होंने खाना भी नहीं खाया। सारा दिन उदास पड़ी रही।``[61] इस बात से स्पष्ट होता है कि रब्बू की क्या अहमियत थी।

रब्बू के न आने पर काम-ज्वर से पीड़ित बेगम जान अपने शरीर की मालिश एक अबोध बच्ची से करवाती है और तृप्ति का अनुभव करती है। रब्बू के आनेपर रात भर उसके साथ बिस्तर में मस्ती लेती है। जैसे - ``हाथी फिर फड़फड़ाने लगा था, जैसे उकड़ू बैठने की कोशिश कर रहा हो, चपड़-चपड़ कुछ खाने की आवाजे आ रही थी, मानो कोई जायकेदार चटनी चाट रहा हो। ---मैंने सूं----सूं-- करके नथुने फुलाकर हवा को सूंघा। इत्र, संदल और हीना की भीनी-भीनी सुगंध के अतिरिक्त और कुछ भी महसूस न हुआ।``[62] इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि बेगमजान और रब्बू बिस्तर में एक दूसरी के साथ मस्ती कर रही है और साथ में एक-दूसरी को चूम भी रही है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि जिस प्रकार आदमी को जिंदा रहने के लिए अन्न और जल की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सेक्स की जरूरत होती है। काम-वासना तृप्त न होने के कारण नारी के जीवन में उदासी छा जाती है, वह काम-वासना शांत करने के लिए छटपटाती है। उसी समय अगर उसे कोई पुरुष नहीं मिलता तो वह ऊपर विवेचित नारियों की तरह नारी से ही संभोग करके तृप्त होने का प्रयास करती है। या फिर किसी असामाजिक ढंग से अपनी काम-तृप्ति करने का प्रयास करती है।

ज. बीमार नारी का जीवन :-

पुरुषों को प्रधानता देनेवाले हमारे समाज में परिवार की कोई नारी बीमार पड़ जाय तो उसकी बीमारी का कोई खयाल नहीं करता। विजय किशोर मानव द्वारा लिखी कहानी `प्रलय` तथा बुटा सिंह द्वारा लिखी कहानी `तीन सतियाँ` में बीमार नारी के जीवन का चित्रण किया है। `प्रलय` कहानी की लक्ष्मी ग्यारह महीने की गर्भवती होने पर भी बच्चा नहीं जनती। बाद में सिर्फ खून बहता रहता है। उसका पति रमेश उसे इलाज के लिए शहर ले जाना चाहता है। परंतु पैसे के अभाव में नहीं ले जाता। जब वह अपने पिता से पैसे मांगने जाता है तो पिताजी कहते हैं - ``इत्ते मा तौ --- वूसरी मेहरिया विआह लई हो।``[63] इस बात से स्पष्ट होता है कि ऐसे आदमी के सामने नारी की कोई कीमत नहीं एक मर गई तो दूसरी शादी करके घर लाते हैं। जैसे ``पड़ोस के कई घरों की जवान बहुए ऐसे ही इलाज में मर भी गई हैं, ----।भाग्य को कोसते, दाह संस्कार के कुछ दिनों बाद ही, अपने तीन-चार बच्चों के लिए नयी मां ले आये और फिर बरस, दो बरस उसकी रात-भर जागी आँखों में जवानी का संतोष तैरता रहा है।``[61] इस बात से स्पष्ट है कि पत्नी के मरनोपरांत पति चार संतानों का बाप होते हुए भी अपनी अधेड़ अवस्था में दूसरी शादी करता है और जवानी के रंग भरने लगता है परंतु पत्नी बीमार होती है तो उसे देखने की जेहमत तक नहीं उठाता। पत्नी बेचारी बीमारी के कारण सड़-सड़ कर मर जाती है।

`तीन सतियाँ` कहानी की सत्यारानी बीमार पड़ जाती है तो उसे परिवार से अलग तीसरी मंजिल पर बरसाती में रखा जाता है साथ हो परिवार के अन्य सदस्यों को उसके पास न जाने की हिदायत दी जाती है। सत्यारानी अकेली अपने नसीब को कोसती बरसाती में पड़ी रहती है। उसकी खबर लेने कोई नहीं जाता, न उसके बेटे-बेटियाँ और न जिंदगीभर साथ निभाने की कसम खानेवाला पति। उन सभी ने अछूत समझकर उसे अलग रख दिया है ``कभी कोई खैर-खबर लेने नहीं आत न बेटा न बेटी, बेटे-बेटियों का तो स्यापा छोड़ो, खसम ही पीठ फेर ले तो फिर बाकी लोग तो लगते ही क्या है।``[64]

सत्यारानी चाहती है कि उसके पास कोई आये, उसका हाल-चाल पूछे परंतु न उसके पास कोई जाता है और न ही उसे बरसाती से नीचे उतरने दिया जाता है। वह अपने पैरों पर खड़ी रह सकती है, चल फिर सकती है परंतु उसके ससूर ने उसे नीचे आने के लिए मना किया है। जैसे - ``अगर रानी नीचे उतरी और उसकी टांग को फिर कुछ हो गया तो मैं फैंक आऊंगा इस चुडैल को मायके के दरवाजे पर !``[65] इस बात से स्पष्ट है कि रानी जब तक काम करने लायक रही और पति और ससूर की हवस मिटाती रही तब तक तो दोनों उसकी तारिफ करते नहीं थकते हैं परंतु जब बीमार पड़ जाती है तो उसे सबसे अलग किया जाता है, किसी को उसके पास जाने भी नहीं दिया जाता। रानी बेचारी भगवान से मौत की कामना करते-करते घुट-घुटकर जीती रहती है।

`दस्तक` कहानी की शबाना को जब उसके परिवारवाले पति काजिम से अलग करते हैं तो वह उसे मिलने के लिए तड़फ-तड़फ कर मर जाती है, हर तरह का इलाज किया जाता है परंतु उसकी असली दवाई (काजिम से मिलाप) नहीं दी जाती। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि बीमारी नारी का जीवन बहुत ही भयानक यातनाओं में गुजरता है।

झ. प्रौढ कुमारी तथा कुरूप नारी का जीवन :-

गरीबी के कारण माता-पिता अपनी बेटियों का विवाह ठीक समय पर नहीं कर सकते अत: लडकियाँ प्रौढ कुमारिका बन जाती हैं। हम-उम्र की लडकियों की शादी होने पर उन्हें उनसे जलन होती है। इस हालत में शादी की चिंता करते-करते लडकियों का स्वास्थ्य बिघड़ जाता है। वह मानसिक रूप से टूट जाती है अत: कोई भी निर्णय बिना सोचे-समझे लेती है। सामाजिक बंधन और पिता की निर्धनता के बीच फंसी युवतियाँ अपने जीवन का विचार न करते हुए निर्णय लेती है। योगेश सूरी के अनुसार - ``थोडी -- उम्र बढ़ने पर वह अकेलापन महसूस करने लगती है। इससे छुटकारा पाने के लिए किसी अधेड़ पुरुष से भी विवाह करने में नहीं सकुचाती। पर ऐसी अवस्था में जब इनकी जवानी की उम्र ढ़ल जाती है तो कोई पुरुष इनका हाथ थामने के लिए तैयार नहीं होता।``[66] इस तरह की समस्या रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` में प्रस्तुत की है। पूरी जवानी पिता को ऊपर उठाने की कोशिश में कथा नायिका की बड़ी बहन की उम्र इतनी बढ़ जाती है कि उससे शादी करने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता। इसके बारे में कथा नायिका कहती है - ``आहा, आज तो सजी-संवरी है ---हिजड़ा लगती है। साली जवानी में ही बुढ़ी हो गयी।``[67] इसी तरह पिता के निर्धन होने के कारण रमेश आनंद द्वारा लिखी

`नियंत्रण` कहानी की आदर्श शादी ही न करने का निर्णय लेती है। वह सोचती है कि अपनी पूरी जिंदगी भाई-बहनों की पढ़ाई और पिता का परिवार चलाने में मदद करके गुजार देगी। जैसे - ``आदर्श ने घर में घोषणा कर दी थी कि वह जिंदगी भर शादी नहीं करेगी। भाई-बहनों को पढ़ाने-लिखाने और घर का बोझ संभालने में पापा का हाथ बटायेगी।``[68]

शारीरिक व्यंग्य तथा कुरूपता के कारण अनेक लड़कियों की शादी नहीं होती। पुरुष उनकी तरफ देखना भी पसंद नहीं करते। जब ऐसी लडकियाँ अनायास ही किसी पुरुष की तरफ देखकर मुस्कुराती है तो उसे नफरत से देखा जाता है, तथा उसको देखकर थुंक दिया जाता है। `हद से हद तक` की नायिका के बारे में इसी प्रकार की घटनाएँ घटित होती है। जैसे - ``शायद उसके चेहरे पर एक मुस्कान खिंची होती, लेकिन जब उसे कोई यों हंसता देखता तो घबराकर आगे बढ़ जाता या नफरत से थुक देता।``[69] इस बात से स्पष्ट होता है कि जवानी के हाथों मजबूर ये लड़कियाँ और लडकियों की तरह किसी युवक से दोस्ती करना चाहती है। उससे प्रेम करना चाहती हैं परंतु उनकी कुरूपता देखकर कोई भी युवक उनके पास नहीं जाता और न ही उनसे बात करता। ऐसे समय ये लड़कियाँ कोई समाज विरोधी गलत कदम भी उठाती है और वही कदम उसके जीवन में समस्या पैदा करता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निर्धनता और कुरूपता के कारण विवाह न होने की स्थिति में लडकियाँ अपनी जवानी की आग में जलती रहती हैं।ऐसे समय वह उचित-अनुचित का विचार नहीं करती और परिवार तथा समाज के विरोध में जाकर किसी मर्द के साथ भाग जाती है। जैसे प्रस्तुत कहानी की नायिका भाग जाती है।

ञ. सास-ननद के नियंत्रण में रहनेवाली नारी का जीवन :-

सास और ननद के द्वारा घर की बहु को तंग किया जाता है, उसे तरह-तरह की यातनाएँ दी जाती हैं । इतना ही नहीं तो घर की बहु को जलाकर मारने में भी पीछे नहीं हटती। सास और ननद नारी जाति की होते हुए भी एक नारी को ही यातनाएँ देती हैं और उसकी मृत्यु की कारण भी बनती है। उसे हर प्रकार से तंग करते-करते उसका जीना हराम करती है। सत्यपाल सक्सेना की लिखी कहानी `अंधेरे के विरूद्ध` में वसुधा की सास और ननद उसे हर तरह से पीड़ित तथा प्रताड़ित करती हैं। ननद खाने-पीने के बारे में अपनी पसंद ना पसंद को लेकर अपनी मां के पास उसकी शिकायत करती है। मां-बेटी दोनों वसुधा के पति के घर आते ही उससे चुगली करती हैं। पति उन दोनों की बात को सही मानकर उसे पीटता है। वह

बेचारी चूपचाप मार खाती रहती है क्योंकि उसका पति ही उसकी बातों का यकीन नहीं करता। वसुधा अपने पर होते रहे अत्याचार के बारे में बताते हुए कहती है - ``शाम को आते ही मां और दीदीने इनके कान भर दिए और ये बिना विचारे ही मुझ पर टूट पड़े ---- मैं सब कुछ चूपचाप सुनती रही। जानती थी, मेरी बात पर कोई कान न देगा।``[70] इतने अत्याचार करने पर भी वसुधा के भाई के सामने उसकी सास वसुधा की निंदा करती है। साथ ही उसके भाई और मैकेवालों को भी भला-बुरा कहती है।

वसुधा पढ़ी-लिखी है। अपना समय बिताने के लिए नौकरी करना चाहती है परंतु सास और पति उसे नौकरी करने नहीं देते। इतना ही नहीं जब वह समय बिताने हेतु पडोस की औरत के पास स्वेटर की बुनाई सीखने के लिए जाती है तो शाम को उसके पति से बताया जाता है, तब पति उसके चारित्र्य पर शक करते हुए कहता है कि ``मैं पहले से ही जानता था कि तुम जैसी औरत एक जगह नहीं टिक सकती। पति की इस अपमानजनक बातों मे वसुधा तिलमिला उठती है। इस प्रकार के अविश्वास के कारण उसे सास मायके तक को नहीं जाने देते। जब कभी मायके जाने की बात करती है तो सास कहती है - ``बाप के घर में छब्बीस साल तक रहकर भी पेट नहीं भरा, जो रोज-रोज मायके जाने की लगी रहती है! मायके से इतना ही लगाव था तो रह जाती वही पर --- क्यों शादी की ?``[71] इसी तरह अपने परिवार को दो टाईम का खाना ठीक मिले इस हेतु दिनरात मेहनत करनेवाली भगवती को पति पिटता है तो उसकी सास और ननद चुपचाप उसे पीटती देखती है।जब वह अपने पति से कुछ कहती है तो दोनों उसे दोष देते हुए कहती है - ``कैसी बेहया औरत है! आदमी के आगे मुँहफट बकबक करे जा रही है।``[72]

बूटा सिंह द्वारा लिखी कहानी `तीन सतियाँ` में संतो की सास भी इस प्रकार संतो को सताती है। जब संतोका पति नौकर की लड़की मंदा को लेकर कमरे में जाता है तो उसका विरोध करने के बजाय संतो की मां कंजरी की तरह दरवाजे की रखवाली करती है। बाद में संतो को ही उन दोनों के लिए दूध गर्म करने के लिए कहती है। संतो कुछ कहना चाहे तो उसकी सास कहती है-``यह तो खानदानी लडकों के मौज-मेल होते हैं, जिस नारी पर मन आ जाये उसे काबू कर लें।``[72] इस बात से स्पष्ट है कि संतो को उसकी सास हर दिन मानसिक यातनाएँ देती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि वह नारी ही है जो सास और ननद के रूप में नारी को जादा-से-जादा पीड़ित करती है। इनके अधिकार में रहनेवाली बहू को पीढ़ा, यातना, अत्याचार और जलालत ही सहनी पड़ती है।

ट. बलात्कारित नारी का जीवन :-

वर्तमान युग में नारी शिक्षा तथा नौकरी के कारण घर से बाहर निकलने लगी है। वह पुरुषों के संपर्क में आने लगी हैं। वह पुरूषों को अपनी तरफ आकर्षित करने की चेष्टा भी करती है। अत: कभी-कभी वह उसकी इच्छा के विरुद्ध पुरुषों द्वारा बलपूर्वक भोगी जाती है। इस प्रकार नारी को उसकी इच्छा के विरुद्ध भोगना ही बलात्कार कहलाता है। इस प्रकार अपनी पत्नी को भोगना भी बलात्कार ही होता है। कुछ मर्द औरत द्वारा समर्पन नहीं चाहते उन्हें जोर-जबरदस्ती में ही मजा आता है। रॉबिन शॉ पुष्प के विचार में ---``अखेट करने में मजा आता है ----। और जब यही `किलिंग हैबिट` सेक्स में डेवलप कर जाती है, तो आदमी को औरत का शिकार करने में आनंद मिलता है -- यह रेप -- बलात्कार और कुछ नहीं एक तरह की हंटिंग है ----- शिकार है --- हंटर मर्दों को समर्पन पसंद नहीं ---- वे तो औरत का आखेट करते हैं ---- उसे छटपटाते हुए देखना चाहते हैं --- फिर बेहोश होते हुए ----उसमें उन्हें संतुष्टि मिलती है।``[74] अर्थात बलात्कार में छटपटाती औरत को देखकर कुछ पुरूषों को संतुष्टि मिलती है।बलात्कार के विषय में धर्मपाल के विचार है, ``नारी की सम्मति के बिना बलात् किया गया यौनाचार बलात्कार कहलाता है।``[75] बलात्कार का शिकार बनी औरत को निर्दोष होते हुए भी समाज उसे हीन समझता है, दोषी समझता है। ऐसी युवतियों के साथ कोई भी पुरुष ब्याह नहीं करता। उसे समाज में मुँह छुपाकर रहना पड़ता है। शकुंतला चव्हाण के अनुसार -``बलात्कार का शिकार नारी ही बनती है जिसके कई दुष्परिणाम उसे भुगतने पड़ते हैं।``[76] किसी नारी पर बलात्कार होता है तो वह दिल-दिमाग और शरीर से टूट जाती है। कभी-कभी तो उसकी यह हालत पागलपन की हद तक जाती है।

बीरराजा द्वारा लिखी कहानी `भोली` की नायिका बलात्कार के पश्चात् अपनी मानसिकता खो बैठती है। उसे अचानक दौरा पड़ता है और वह बलात्कारी समझकर अपने ही किसी परिवार के सदस्य पर झपट पड़ती है। जैसे - ``नहीं -नहीं वह मुझ पर झपटी, मार डालूंगी बदमाश --- छोड़ मुझे --- उसके दांत गालों में गढ़ गये और मेरे सिर के बाल उखड़कर उसके हाथों में चले गए।``[77] इस बात से स्पष्ट होता है कि भोली ने बलात्कारी का कड़ा मुकाबला किया है और वह अभी तक उससे लड़ रही है। बलात्कारित नारी पर बलात्कार का इतना गहरा असर होता है कि आस-पास कहीं हल्की-सी आवाज भी आये तो वह डर जाती है। उसके आँखों के सामने बलात्कार का दृश्य घुम जाता है। और वह

चिल्लाने लगती है। बलात्कारित भोली की हालत का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं - ``जैसे ही उसने घंटी बजायी। बजायी हुई घंटी से डर उठी -वहां अंदर घंटी न बजकर हार्न बज उठा हो।``[78] इस बात से स्पष्ट होता है कि बलात्कारी किसी वहान से आये थे अत: हार्न से मिलती-जुलती आवाज सुनते ही भोली डर जाती है।

बलात्कार में नारी का कोईदोष नहीं होता। वह तो पुरुष के अखेट का शिकार बनती है परंतु समाज उसे ही दोष देता है और वह भी अपने-आप को ही दोषी मानती है। इसी कारण भोली अपने मंगेतर को अपने पास तक नहीं आने देती। वह अपने-आप को अपवित्र समझती है तथा मंगेतर के लायक नहीं समझती। समाज में भी उसे अनेक अश्लील लोगों द्वारा यातना सहनी पड़ती है। जब वह घर से बाहर निकलती है तो लोग उस पर तरह-तरह की फब्तियाँ कसते हैं - ``बहुत से अश्लील फिकरों तथा संवादोंने हमारा स्वागत किया। एक भीड़ हमारे चारो तरफ मंडराने लगी।``[79] इससे स्पष्ट है कि पहले ही बलात्कार के कारण पीड़ित नारी को समाज और भी पीड़ित करता है। कई बार तो यह भी होता है कि जिस नारी पर बलात्कार हुआ है उसे उसके अपने ही भूलते हैं, उसकी हालत को पहचान उसके साथ बात करना तक गंवारा नहीं समझते। भोली को जब उसका मंगेतर मिलने जाता है और दरवाजा न खोलने पर उसे पीटता रहता है तो एक औरत कहती है - ``इस घड़ी में कोई पास नहीं भटकता -- भाग्यवान हो।``[80] कुछ नारियाँ तो अपनों के द्वारा ही बलपूर्वक भोगी जाती है। इसका उदाहरण `तीन सतियाँ` कहानी की नायिका सत्यारानी है जिसे उसका ससूर ही बलपूर्वक भोगता है। उसी प्रकार कुछ औरते अकेली असहाय होने पर उनकी मदद करने के बदले पुरूष उसका शरीर भोगता है। `आधी उम्र की पूरी औरत` कहानी में सुदामा के पति के मरने के बाद उसके पति का मित्र ही उसे उसकी मदद करने के बदले भोगता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भोली बलात्कार का शिकार होने पर अपना मानसिक संतुलन खो देती है। उसे समाज दया की नजरों से देखने की अपेक्षा हीन भावना से देखता है। वह घर से बाहर भी नहीं निकल सकती। पुरूषों द्वारा किए गुनाह की सजा नारी को ही भुगतनी पड़ती है।

ठ. कुंआरी माता का जीवन :-

भारतीय संस्कृति में विवाहित महिलाओं को ही संतति व्युत्पत्ति का विशेषाधिकार होता है। कुंआरी लड़की द्वारा मां बनना समाज को स्वीकार नहीं है। कुंआरी माता को समाज हर प्रकार से तंग करता है। पीड़ित करता है। योगेश सूरी के अनुसार - ``कुंआरी महिला अगर गर्भवती हुई तो उसकी

दुरावस्था की कुछ सीमा नहीं होती क्योंकि हमारे समाज में संतानोत्पत्ति की नैतिकता के बंधन में बंधा है और संतानोत्पत्ति केवल विवाहित महिलाओं का ही विशेषाधिकार है।``[71] स्पष्ट है कि कुआरी माता को समाज स्वीकार नहीं करता, उन्हें बहिष्कृत किया जाता है।

जवानी के दिनों में की गलतियों के फलस्वरूप तथा बलात्कार के परिणाम से नारी को कुआरी माता की भूमिका निभानी पड़ती है। कुछ लडकियाँ नौकरी करती हैं तो उसे स्थाई रखने के लिए तथा पदोन्नति के लिए उन्हें अपने उच्चधिकारियों को खुश करना पड़ता है। इसके कारण भी उन्हें कुंआरी माता बनना पड़ता है। कुछ लडकियाँ निर्धनता के कारण दूसरों के यहाँ बर्तन मांजना तथा कपडे धोने जैसा काम करती हैं। ऐसी लडकियाँ मालिकों के बेटे तथा मालिकों के हाथों कुछ पैसे देकर या फिर जोर-जबरदस्ती से भोगी जाती है। ऐसे में अगर वह कुंआरी माता बनती है तो उसका जीना दुभर हो जाता है। ``पोश कालोंनियों में कार्यरत घरेलु नौकरानियाँ मालिक अथवा उनके युवा बेटों की हावस का शिकार हो जाती है।``[72] ऐसी युवतियाँ जब गर्भवती बन जाती हैं तो उन्हें दर-दर की ठोकरे खाने के लिए छोड दिया जाता है। क्वीनी ठाकुर द्वारा लिखी कहानी `जानकी` की नायिका जानकी `अफ्टर केअर होम` के बाहर घरेलु नौकरानी के रूप में काम करने जाती है। जब मलकिन घर पर नहीं होती तो उसका मालिक उसे जबरदस्ती अपनी हवस का शिकार बनाता है। जानकी बेचारी चूपचाप अपना शरीर उसके हवाले करती है ताकि वह फिर से `अफ्टर केअर होम` में जाना नहीं चाहती और कहीं दूसरी जगह जाना उसके बस की बात नहीं है। अपने मालिक द्वारा भोगी जाने के कारण युवा जानकी पेट से रहती है इस बात को जानकर उसकी मालकिन उसे फिर उसी जगह छोड जाती है। बाद में वैद्यकीय चिकित्सा में पता चलता है कि जानकी के दिन चढ़ गए है। डॉक्टर के पूछने पर जानकी डॉक्टर से बताती है -``जब मालकिन नहीं होती थी तो मालिक अकेली पाकर जबरदस्ती ---।``[73] इस बात के फैलते कि जानकी मां बननेवाली है उसकी अपनी सहेलियाँ भी उसे बदनाम, बेइज्जत करती है। इस कारण जानकी सबसे अलग, गुमसुम, अकेली रहने लगती है। खुद की बदनामी से बचने के लिए वह किसी के साथ बात तक नहीं करना चाहती।

जानकी के बेटा होता है जानकी व बाकी लडकियों के लिए एक खिलौना मिलता है, जिसे लेकर वे अपना दिल बहलाती रहती है। जानकी भी खूश है। संस्था के नियम के कारण जानकी को जादा दिन संस्था में रहने की सुविधा नहीं है। उसकी शादी कर देने की सोचते हैं। परंतु ऐसी कुंआरी माता के साथ कोई शादी करने के लिए तैयार नहीं होता और होता भी है तो कोई विधुर या अधेड, फिर भी उसके

बच्चे को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होता। जानकी के बारे में भी ऐसा ही होता है। पहले तो एक आदमी उसे बच्चे के साथ स्वीकारने के लिए तैयार हो जाता है। बाद में इन्कार करता है। जानकी बेचारी शादी की बात सुनकर खुश हो जाती है। सब लडकियों को खुशी-खुशी बताती है। बनने संवरने लगती है। परंतु जब उसकी बात बिघडती है तो वह फिर से परेशान, उदास, अकेली रहने लगती है। पहले तो वह अपने बच्चे ललमुनवा से बहुत प्यार करती थी। बच्चे के कारण उसकी शादी टूट जाती है तो वह उसका तिरस्कार करने लगती है। बीमारी के कारण जब वह रोता है तो तंग आकर जानकी उसे सुखे कुए में फैंक देती है। उसे मार डालती है। बच्चे को मार डालने के जुर्म में उसे कानून सजा देता है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि कुंआरी माता बनना नारी के लिए अभिशाप है। उसे न तो घरवाले स्वीकार करते हैं और न समाज। उसका जीवन चहुं ओर से अपमान, प्रताड़ना, पीडा व अत्याचारों के बीच घीर जाता है।

ङ अकेली नारी का जीवन :-

समाज में किसी औरत का अकेले जीवन बिताना बहुत ही कठिन है। उस पर वह औरत अगर जवान और खूबसूरत हो तो समाज में स्थित वासना के भेडिए उसे हर प्रयास से अपनी वासना का शिकार बनाने का प्रयास करते हैं। हरमन चौहान की कहानी `छाग`में एक बुजुर्ग देहाती गलकू के बारे में बताते हुए कहता है - ``औरत और गाय खूंटे पर बंधी हुई ही अच्छी लगती है। जिसका कोई धनी (मालिक) नहीं होता है, वह या तो भटक जाती है या लोग भटकाते हैं।``[84] अत: स्पष्ट है कि अकेली बेसहारा औरत अपना चरित्र कितना ही अच्छा रखने का प्रयास करें उसे समाज के वासनांध पुरूष बहकाकर निचोड लेते हैं।

प्रस्तुत कहानी की नायिका गलकू, जिसकी माँ को वेश्यावृत्ति के इल्जाम में नाक काटकर गांव से बाहर निकाल दिया जाता है। दोनों माँ बेटी दर-दर की ठोकरे खाती भटकती रहती हैं। हर जगह प्रताड़ना और अपमान सहते-सहते दिन बिताती हैं। मां के मर जाने के बाद गलकू अकेली रह जाती है तो समाज में रहनेवाले कुछ समाज के ठेकेदार उसका जीना मुश्किल करते हैं। उस पर वेश्यावृत्ति तथा गोठिया के खून के झूठे इल्जाम में फंसाकर जेल भेजते हैं। समाज द्वारा पीड़ित गलकू अपने पर किए अत्याचार को गिनती उन ठेकेदारों का भांड़ा फोड़ती हुई कहती है - ``जजसाब गवाह नंबर एक, ----धंदे से बनिया है। ---मैं छोटी थी, तब मुझे अपनी दुकान में बुलाकर मिठी-मिठी गोलियाँ देता था और बदले में मेरी छाती

की गोलाइयाँ दबाता था।-- गवाह नंबर दो --- गांव का सरपंच है। मेरी मां के साथ सोता था और मुझे बेटी-बेटी कहकर मेरे होठों का रस चूसता था। गवाह नंबर तीन --- ठाकुर --, जिसने मेरी मां के साथ मेरे ही सामने कभी जबरदस्ती की थी। गवाह नंबर चार --कलुए--, जिसने पहली बार मेरे साथ खेत में जबरदस्ती करके दो कलदार रूपए इस जिस्म के आंके थे गवाह नंबर पांच, उस भड़वे को देखो, जो दिन भर निठल्ला रहता है। मेरी मां का दलाल बनकर उससे धंधा करवाता था। मेरे बाप को भड़काकर पहले मेरी मां की नाक कटवायी और फिर घर से निकलवा दिया।``[85] तात्पर्य यह कि समाज के वे ही लोग जिनका चरित्र अपने-आप में बूरा है, गलकू को चरित्रहीन तथा खूनी करार देकर पुलिस के हवाले करते हैं और झूठी गवाही भी देते हैं।

जगवीर सिंह वर्मा द्वारा लिखी कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` में पति के मरने के उपरांत विधवा सुदामा अपनी छोटी बेटी परसादी के साथ बेसहारा होती है। इसकी जायदाद तथा पति की पेंशन हड़प करने के लिए उसे तरह-तरह की यातनाएँ देते हैं। उसके पति की पेंशन पर सिर्फ उसी का अधिकार है परंतु उसके देवर और गांववाले उसमें रूकावट बनते हैं। जैसे-``पेंशन में भी उसके देवर वगैरह ने चक्कर डाल दिया है कि वह बहोरन की पत्नी नहीं, रखैल है और पेंशन के हकदार वे लोग हैं। पहले तो ग्राम प्रधान ने भी लिखकर दे दिया कि वह बहोरन की पत्नी है और अकेली वही वारिस है, बाद में कुछ लोगों के दबाव पर वह भी बात बदलता है।``[86] इतना ही नहीं अपनी और बेटी की सुरक्षा के लिए वह रामप्रसाद को अपना दामाद बनाती है। लड़की नाबालिग है इस बात को लेकर कुछ लोग उसके देवरों को सलाह देते हैं कि सुदामा पर शारदा ऍक्ट लगवाया जाये। इस प्रकार सुदामा देवरों से और गाववालों से पीड़ित बहोरन की याद करके घुट-घुटकर जीती है। नौकरी करनेवाली सुंदर जवान अकेली नारी को उसी के सहकर्मी अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। इस बात का उदाहरण नछत्तर द्वारा लिखी कहानी `अंदर का आदमी` में मिलती है। कहानी में चित्रित अध्यापिका अजैब भैणजी को अकेली पाकर उसके सहकर्मी उसकी इज्जत लुटते हैं। परंतु उनके डर से तथा अपनी बेइज्जती के डर से अध्यापिका खुशी-खुशी उन्हें अपने शरीर पर झेलती है और उस घटना के बारे में किसी को बताती भी नहीं है।

प्रस्तुत कहानियों के विवेचन से निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि अकेली खूबसूरत नारी का समाज में रहना बहुत ही कठिन बात है। उसे या तो समाज में रहनेवाले वासनांध भेडिए नोच डालते हैं या फिर गलकू की तरह कोई झूठे केस में फंसाकर पुलिस के हवाले करते हैं। वह औरत अगर विधवा हो

और पति के बाद जायदाद की वारिस हो तो उसकी जायदाद हड़पने के प्रयास किए जाते हैं। इस प्रकार अकेली जवान, खूबसूरत नारी का समाज में कोई स्थान नहीं होता। वह तो समाज के इशारों पर नाचती रहती है। यही उसका जीवन है जिसे जीने के लिए वह बाध्य है।

ढ. विधवा नारी का जीवन :-

राजा राममोहन राय (1772-1833) के प्रयास से सति-प्रथा को कानूनन बंद किया गया जिसमें औरते अपने पति की चिता में जलकर मर जाती थी इस प्रथा के बंद होने के बाद नारी का विधवा रूप सामने आया। आज भी समाज में विधवा नारी का वही स्थान है जो पहले था। घर में किसी भी शुभकार्य में उसे सम्मिलित नहीं किया जाता। उस पर परिवारवालों के साथ-साथ समाज भी अत्याचार करता है। कई बार पति की मृत्यु का पत्नी को ही कारण माना जाता है और उसे प्रताड़ित किया जाता है। योगेश सूरी के अनुसार - ``हिंदू समाज में विधवा नारी सबसे तुच्छ और निराश्रय प्राणी मानी जाती है और उसके वैधव्य को नारी का अभिशाप माना जाता था।``[87] स्पष्ट है कि पति के मरने के बाद नारी निराश्रित, निसहाय तथा पराधीन हो जाती है। परिवार में उसे सभी अधिकारों से वंचित किया जाता है। पति के रहते जो नारी सर उठाकर समाज में जीती है वही विधवा होने के कारण समाज में मुँह छुपाकर या गर्दन झुकाकर जीने के लिए मजबूर हो जाती है। योगेश सूरी के अनुसार - ``पति को पाने पर याने कि विवाहोपरांत वह समाज में जैसी अपनी गर्दन ऊँची करके घुमती-फिरती तथा प्रसन्न बदन दिखाई देती है, वैसे ही पति के खोने पर समाज पहले जैसा उसका स्वागत नहीं करता और उसका खिला हुआ चेहरा हमेशा के लिए मुरझा जाता है।``[88] स्पष्ट कि है भारतीय नारी की शान तब तक ही है जबतक उसका पति जीवति है उसके उपरांत उसकी कोई कीमत कोई मान-सम्मान नहीं रह जाता।

पति के मर जाने के बाद अकेली विधवा पीछे रह जाती है तो उसे समाज और अपने संबंधियों से अनंत यातनाएँ मिलती है। उसे उसके अधिकार से हटाने की कोशिश की जाती है। उसको जायदाद तथा घर से बाहर निकाल दिया जाता है। जगवीर सिंह चावला की लिखी कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` इसी बात को स्पष्ट करती है। पति के मरने के बाद विधवा सुदामा अकेली हो जाती है, बेटी है पर अभी नासमज है। इसका फायदा उठाकर उसके देवर उसे जायदाद से बेदखल करने का प्रयास करते हैं। इतना ही नहीं तो उसके पति सेना में थे। उन्हें सेवानिवृत्ति का वेतन मिलता था। पति के बाद मिलनेवाले उन पैसों पर सुदामा का ही अधिकार है परंतु गाँववालों की मदद से उसके देवर उसे बहीरन की रखैल

साबित करके पेंशन पर खुद दावा करते हैं। ऐसे में सुदामा अपनी तथा बेटी की सुरक्षा हेतु बेटी का हाथ अपने पति की उम्र के रामप्रसाद के हाथ में देती है। लड़की नाबलिग होने के कारण गाँववाले उसे अधिक पीड़ित करने के लिए उस पर शारदा ऍक्ट लगाने का परामर्श उसके देवरों को देते हैं।

समाज और देवरों द्वारा दी जानेवाली जलालत के कारण सुदामा आहत होती है। वह हमेशा अपने तथा बेटी के जीवन के बारे में सोचती रहती है। इस सोच-विचार तथा यातनाओं के कारण उसे नींद नहीं आती। वह चाहती है कि उसे गहरी नींद आये और सपने में बहोरने के साथ बिताए जीवन की सुखानुभूति की पुनरावृत्ति हो। ``सुदामा चाहती है, उसे खूब गहरी नींद आये, सपने में बहोरन दिखे, उससे सुख-दु:ख की बातें करे, प्यार करे, उसके ढिंग सोये ! लेकिन उसे गहरी नींद नहीं आती, सपना नहीं दिखता, बहोरन नहीं आता, जो सोचती है उसका अंत होता नहीं दिखता।``[89] प्रस्तुत उद्धरण से यह भी स्पष्ट होता है कि सुदामा की सपने में बहोरन आकर उससे प्यार करने की अभिलाषा उसके काम पीड़ित होने का संकेत करती है। किसी ने कहा है कि `प्राणी` को अन्न और जल के साथ सेक्स की भी नितांत अवश्यकता होती है।`` सुदामा अभी जवान है अत: उसके मन में भी काम वासना निर्माण होती है। बेटी के प्रति अपना कर्तव्य तथा समाज के डर से वह अपनी इच्छा अंदर ही अंदर दबाए रखती है। सुदामा की इच्छा होती है कि बेटी की जगह खुद रामप्रसाद के साथ सोए। जैसे - ``अब इसे वह कैसे समझाऐ? कैसे समझाये कि वह तो चाहती है कि वह इत्मीनान से अलग चारपाई पर सोये या उसी के ढिंग सो जाये, मगर --- वह तो उसके बदले में ---हिश्ट, आप ही आप शर्म से भीग उठती है सुदामा --- यह किस्सा निबट जाये, तब कुछ सोचेगी, अभी तो यही सब सोचने से फुर्सत नहीं है।``[90] इस बात से स्पष्ट है कि सुदामा अपने दामाद की आस दिल में लगाए बैठी है। परंतु पारिवारिक परेशानियों के कारण चूपचाप काम-पीड़ा को पीती है।

सुदामा अपना कर्तव्य और समाज में होनेवाली बेइज्जती के डर से अपने दामाद के साथ इच्छा होते हुए भी कोई शारीरिक संबंध नहीं रखती। परंतु अरिगपूडि की कहानी `उलझे संबंध` की नायिका अंबिका देवी अपने दामाद के साथ शारीरिक संबंध रखती है। इस संबंध के लिए उनकी बेटी की भी अनुमति है। तभी तो वह खुद जगहंसाई के डर से उन्हें सिंगापुर भेजती है। अंबिका देवी बेटी के कहने पर शिंगापुर भाग तो आती है और वह परेशान-सी सोचती है - ``लोग कहते हैं कि लडकी रजस्वला हो जाय तो मां-बाप चैन से नहीं सो सकते और एक मैं हूँ !``[91] इस कर्तव्य के याद आते ही अंबिका देवी

बेचैन हो जाती है। परंतु वहां जाने पर भी समाज में बेइज्जत होना पडेगा अत: वह अपने दामाद के साथ उसकी पत्नी बनकर शिंगापूर में ही रहती है। यहां लेखक ने विधवा नारी के द्वारा समाज निर्मित नियम को तोड़ दिया है, जो विधवा नारी को पुनर्विवाह की मान्यता नहीं देता।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त कहानियों के विवेचन के आधार पर निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नारी को प्राचीन काल से लेकर आज तक पीडित ही होना पड़ा है। उसका जीवन पुरूषों का आधार लेकर ही आगे बढ़ता है। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है। बचपन में पिता के, विवाहोपरांत पति के और बुढ़ापे में बेटे के सहारे उसे जीवन यापन करना पड़ता है। आज नारी शिक्षा के कारण वह बहुत आगे निकल चुकी है। वह पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर उस काम में अपना योगदान देने लगी है जिसे आजतक सिर्फ पुरूष ही करते आये हैं।

गृहिणी नारी का जीवन तो पूरी तरह अपने घर-परिवार के पचड़ों में ही बितता है। घरेलू काम करते करते नारी बर्तन मांजना व कपडे धोने का भी काम दूसरों के घरों में करती है। परिवार को चलाने के लिए उसे दिनरात मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी पति उसे प्यार करने की अपेक्षा पीटता है। तथा उसकी इच्छा के विरूद्ध भोगता है। वास्तव में यह एक प्रकार का बलात्कार ही है, जिसे आज भी नारी अपने दिलों-दिमाग पर झेलती रहती है। अकेली नारी को तो समाज में रहनेवाले कामांध पुरूष उसे भोगने का हर तरह से प्रयास करते हैं। कभी राजी-खूशी से तो कभी जोर-जबरदस्ती से उसका लैंगिक शोषण किया जाता है। कई बार नारी को तो अपने ससूर के द्वारा किए बलात्कार को सहना पड़ता है। एक तरह से वह पति और ससूर में एक वेश्या का ही जीवन बिताती है। कई औरतें तो परिवार के तीन -तीन, चार-चार मर्दों की हावस का शिकार बनती हैं।

निर्धनता तथा कुरूपता के कारण कई युवतियों की शादियाँ नहीं होती। अत: ऐसी युवतियाँ काम-ज्वर से पीड़ित होकर किसी के साथ भाग जाती है या फिर अजीवन शादी न करने का निर्णय लेती हैं। समाज द्वारा बनाए नियम शादी की अनिवार्यता को तोड़ देती है और बताती है कि लडकियाँ भी लडकों की तरह अपने परिवार का आधार बन सकती हैं। घर से भाग जाने और शादी करनेवाली युवतियों को पति ने छोड़ दिया तो उनका दोनों तरफ से आधार टूटता है। उन्हें न तो पति के घर सहारा मिलता है और न मायके में। ऐसी नारी को अपने जीवन यापन के लिए तन का व्यापार करना पड़ता है।

परिवार में कोई नारी बीमार पड़ जाती है तो उसे पुरूषों की तरह वैद्यकिय सुविधा मुहय्या नहीं की जाती। बीमार नारी को तो घर के सदस्यों से मिलने तक नहीं दिया जाता । वह परिवार से अलग चारपाई पर पड़ी घुट-घुटकर अपने दिन काटती है। और भगवान से मौत की कामना करती है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि जब तक औरत की जवानी है वह तंदुरूस्त है तब तक ही उसकी जिंदगी है। बीमार होने पर उसे दुध में पड़ी मख्खी की तरह परिवार से अलग किया जाता है। बीमार पड़नेपर कई बार तो नारी इलाज के बगैर ही मर जाती है और पति उसकी चीता की आग ठंडी होने से पहिले ही ब्याह रचाते है। पुरूष तो विवाह करके दूबारा घर बसाते हैं परंतु नारी को इस बात की सुविधा समाज ने नहीं दी। नारी को पति की मृत्यु के बाद अनेक सामाजिक तथा पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विवेच्य कहानियों में चित्रित विधवा नारियों की काम समस्या को भी चित्रित किया है। विधवा लोक-लाज के कारण अपनी कामेच्छा को दबाए रखती है परंतु कुछ विधवाएँ किमी और पुरूष के साथ भाग जाती है। परंतु सुख की खोज में गई ओ नारी अपने अतीत को याद कर दु:खी ही होती है।

बलात्कार नारी की इच्छा के विरूद्ध किया यौवनाचार है। इस में नारी का कोई दोष न होते हुए भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बलात्कारित नारी को समाज तुच्छ समझता है। वह समाज में चर्चा का विषय बनती है। बलात्कार का शिकार बनी कुछ लडकियाँ तो अपनी मानसिकता खो बैठती है। बलात्कारित नारी के साथ कोई विवाह करने के लिए भी तैयार नहीं होता। इसका परिणाम नारी के साथ-साथ उसके पूरे परिवार में दिखाई देता है। बलात्कार के कारण कुछ लडकियाँ कुंआरी माता तक बन जाती हैं। कुंआरी माता बनना हमारे समाज में बहुत बड़ा गुनाह या पाप समझा जाता है। ऐसे वक्त नारी को उसके अपने ही छोड़ देते हैं। उसे बेइज्जत करते हैं। किसी कुंआरी लड़की को दिन चढ़ गए है इस बात को परिवार तथा समाज परिचित होता है तो सभी उसे लांच्छित करते हैं। उसके पास कोई नहीं जाता। कुंआरी माताओं के साथ कोई शादी करने के लिए तैयार नहीं होता और कोई विधुर या अधेड़ तैयार भी होता है तो उसके बच्चे को स्वीकारने में असमर्थता दिखाता है। अत: कुछ लडकियाँ कुछ खिलाकर यां कहीं फैंक कर मार डालती है। इन सभी बातों से स्पष्ट होता है कि नारी का जीवन आज भी अनंत यातनाओं से भरा है। इन यातनाओं के बीच छटपटाती नारी मजबूरी में ही सही अपना जीवन बिताने के लिए विवश है।

: संदर्भ :

1. मैथिलीशरण गुप्त :यशोधरा, पृ. 47

2. विकासकुमार झा :`औरत भी जिंदा इंसान नहीं भोगा की वह सामान`, `सारिका`
नारी यातना-कथा विशेषांक-दो (वर्ष : 22, अंक :323) पृ. 60

3. क्षमा शर्मा : `क्या सती प्रथा फिर लौट रही है?`, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक पृ. 75
(वर्ष :22, अंक : 322)

4. वहीं, वहीं, पृ. 76

5. वहीं, वहीं, पृ.76

6. मधू किश्वर : बीस या पच्चीस, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एक , पृ. 85
(वर्ष : 22, अंक : 322)

7. वहीं, वहीं, पृ. 85

8. वहीं, वहीं, पृ. 87

9. वहीं, वहीं, पृ. 87

10. वहीं, वहीं, पृ. 87

11. श्याम निर्मम : सांप सीढ़ी, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 58
(वर्ष :22, अंक : 322)

12. वहीं, वहीं, पृ. 58

13. वहीं, वहीं, पृ. 58

14. वहीं, वहीं, पृ. 60

15. धर्मपाल : नारी एक विवेचन , पृ. 94

16. डॉ. शकुंतला चव्हाण : यशपाल साहित्य में काम चेतन, पृ. 174

17. रामदरश मिश्र : हद से हद तक , `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-2, पृ. 31
(वर्ष :22, अंक : 323)

18. मधु किश्वर : बीस या पच्चीस, `सारिका` नारी-यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 84
(वर्ष :22, अंक : 322)

19. श्याम निर्मम : सांप सीढ़ी , `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 59

(वर्ष : 22, अंक : 322)

20. डॉ. घनश्यामदास भुतड़ा : समकालीन कहानियों में नारी के विविध रुप ,पृ. 66

21. सत्यपाल सक्सेना : अंधेरे के विरूद्ध, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 64

(वर्ष : 22, अंक : 323)

22. वहीं, वहीं, पृ. 65

23. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 66

24. बूटा सिंह : तीन सतियाँ, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 67

(वर्ष : 22, अंक : 322)

25. वहीं, वहीं, पृ. 67

26. कमलेश भारती :एक सूरज मुखी की अधूरी परिक्रमा, पृ. 49

27. वहीं, वहीं, पृ.49

28. वहीं, वहीं, पृ. 50

29. कर्तारसिंह दुग्गल : करवां चौथ, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक , पृ.15

(वर्ष : 22. अंक : 322)

30. योगेश सूरी : यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 117

31. रामदरश मिश्र : हद से हद तक , `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-2, पृ. 31-32

(वर्ष :22, अंक : 323)

32. वहीं, वहीं, पृ. 34

33. नासिरा शर्मा : दस्तक, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 25

(वर्ष :22, अंक : 323)

34. वहीं, वहीं, पृ. 24

35. बूटा सिंह : तीन सतियाँ, `सारिका` नरी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 68

(वर्ष : 22, अंक : 322)

36. वहीं, वहीं, पृ. 69

12526
B

37. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 55

38. बूटा सिंह : तीन सतियाँ, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 69

(वर्ष : 22, अंक : 322)

39. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 55

40. वहीं, वहीं, पृ. 40

41 नफीस आफरीदी : दौड़, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-दो , पृ. 45

(वर्ष : 22, अंक : 323)

42. वहीं, वहीं, पृ. 44

43. वहीं, वहीं, पृ. 46

44. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 121

45. कर्तारसिंह दुग्गल : करवां चौथ, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 14

(वर्ष : 22, अंक : 322)

46. घनश्यामदास भुतड़ा :समकालीन हिंदी कहानिया में नारी के विविध रूप , पृ. 67

47. कर्तारसिंह दुग्गल : करवां चौथ, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 14

(वर्ष : 22, अंक : 322)

48. नछत्तर : अंदर का आदमी, `सारिका` देह-व्यापार-कथा विशेषांक- पाँच, पृ. 43

(वर्ष : 23, अंक : 341)

49. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 82

50. रिचर्ड द अंब्रेसिओ : बेकसी के आगे, `सारिका` देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 71

(वर्ष : 23, अंक : 34)

51. वहीं, वहीं, पृ. 71

52. रामदरश मिश्र : हद से हद तक, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक- दो, पृ. 31-32

(वर्ष :22, अंक : 323)

53. वहीं, वहीं, पृ. 31

54. योगेश सूरी : यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 87

55. जगवीर सिंह वर्मा : आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ .91

(वर्ष : 22, अंक : 322)

56. वहीं, वहीं, पृ.

57. योगेश सूरी : यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 121

58. रामदरश मिश्र : हद से हद तक, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 32

(वर्ष :22, अंक : 323)

59. सआदत हसन मंटो : धुंआ, `सारिका` जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 36

(वर्ष: 21, अंक : 289)

60. इस्मत चुगताई : लिहाफ, `सारिका` जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक- दो, पृ. 43

(वर्ष :21, अंक : 289)

61. वहीं, वहीं, पृ. 45

62. वहीं, वहीं, पृ. 47

63. विजय किशोर मानव :प्रलय, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 66

(वर्ष :22, अंक : 323)

64. बूटा सिंह : तीन सतियाँ, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 66

(वर्ष : 22, अंक : 322)

65. वहीं, वहीं, पृ. 66

66. योगेश सूरी : यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 149/150

67. रामदरश मिश्र : हद से हद तक, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 31

(वर्ष :22, अंक : 323)

68. रमेश आनंद : नियंत्रण, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 78

(वर्ष :22, अंक : 323)

69. रामदरश मिश्र : हद से हद तक, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 32

(वर्ष :22, अंक : 323)

70. सत्यपाल सक्सेना : अंधेरे के विरूद्ध, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 64

(वर्ष :22, अंक 323)

71. वहीं, वहीं, पृ. 64

72. मधु किश्वर :बीस या पच्चीस, `सारिका` नारी-यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 84

(वर्ष :22, अंक : 322)

73. बूटा सिंह : तीन सतियाँ, `सारिका`, नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 67

(वर्ष : 22, अंक : 322)

74. रॉबिन शॉ पुष्प : देह यात्रा, पृ. 66

75. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 127

76. शकुंतला चव्हाण :यशपाल साहित्य में कामचेतना, पृ.

77. बीर राजा : भोली, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एक , पृ. 32

(वर्ष :22, अंक : 322)

78. वहीं, वहीं, पृ. 32

79. वहीं, वहीं, पृ. 32

80. वहीं, वहीं, पृ.

81. योगेश सूरी : यशपाल के उपन्यासों नें नारी जीवन की समस्याएँ , पृ. 146

82. धर्मपाल : नारी एक विवेचन, पृ. 136

83. क्वीनी ठाकुर : जानकी, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक -दो , पृ. 87

(वर्ष :22, अंक : 323)

84. हरमन चौहान : छाग, `सारिका` देह-व्यापार-कथा विशेषांक -तीन, पृ. 87

(वर्ष :22, अंक : 317)

85. वहीं, वहीं, पृ. 86

86. जगवीर सिंह वर्मा : आधी उम्र की पूरी औरत, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 90

(वर्ष: 22, अंक : 322)

87. योगेश सूरी : यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 163

88. वहीं, वहीं, पृ. 163

89. जगवीर सिंह वर्मा : आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एकख पृ. 90
(वर्ष : 22, अंक : 322)

90. जगवीर सिंह वर्मा : आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 93
(वर्ष : 22, अंक : 322)

91. आरिगपूडि : उलझे संबंध, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-एक , पृ. 22
(वर्ष : 22, अंक : 322)

****